विद्या भवन खोज–ख़बर

विद्या भवन सोसायटी स्थापना-1931

वर्ष–2 | अंक–3 | अप्रैल–जून, 2014

www.vidyabhawan.org

संदेश

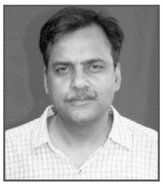

'विद्या भवन खोज–ख़बर' का उद्देश्य है कि विद्या भवन के प्रति स्नेह व रुचि रखने वाले सभी लोगों के बीच संवाद बने व बढ़े। हर संस्था में बहुत कुछ होता रहता है, उसमें कार्य करने वाले और उससे जुड़े सब लोग इसके बारे में चर्चा करते रहते हैं, सोचते रहते हैं। 'विद्या भवन खोज–ख़बर' के माध्यम से हम चाहते हैं कि जो हो रहा है, जो सोचा जा रहा है और जो आगे का सोच व योजनाएं तैयार की जा रही हैं उनकी एक झलक सब को मिले जिससे वह अहसास कर पाएं कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। जाहिर है कि यह सब हम बहुत विस्तार में नहीं कह सकते। हमारा प्रयास है कि हम इस सब की खुशबू आप तक पहुंचाएं; फिर जिसमें जिसकी अधिक रुचि हो वह और जानने के लिए उस संस्था से वार्तालाप करे।

'विद्या भवन खोज–ख़बर' तैयार करने वाली टीम पिछले वर्ष में कई तरह के मुद्दों पर विचार करती रही है और कई प्रयोग भी करती रही है। इसके बारे में लोगों की राय, प्रकार व साम्रगी पर टिप्पणी, उपयुक्त सामग्री की पहचान व तैयारी में खामियों आदि पर बातचीत की है। हर संस्था में एक कार्यकर्त्ता को रिपोर्टर बनाया गया है। इन कार्यकर्ताओं के क्षमतावर्द्धन के लिए समय–समय पर बैठक व कार्यशालाएं हुई हैं। इनमें पत्रिका के स्वरूप व सामग्री के बारे में विचार–विमर्श भी हुआ है व जिम्मेवारी का बंटवारा भी। हमारा आग्रह है कि आप पत्रिका के लिए लेख अथवा टिप्पणी–सुझाव भेजें। इससे ही पत्रिका के ज़्यादा व्यापक व सटीक स्वरूप का विकास हो पाएगा।

पाठकों में विविधता के कारण इसमें सामग्री भी विविध होनी चाहिए। हम यह भी चाहेंगे कि इस विविधता में अलग–अलग नजरिए वाले लोग अलग–अलग बातों पर विचार कर लिखें। इस अंक में आपको बहुत–सी बातें मिलेंगी और उन पर थोड़ा–बहुत मनन भी। हम यहां रुकना नहीं चाहते।

विद्या भवन में कई नए संस्था प्रमुख आए हैं। इनके आने से इन संस्थाओं में नेतृत्व के अभाव के चलते आई परिस्थिति सुधरेगी, ऐसा हम सब मानते हैं। स्वैच्छिक सामाजिक संस्थाओं व निजी हित के लिए कार्यरत संस्थाओं में भेद के चलते हमारे लिए नए जोश से स्वयं को परिभाषित करने की जरूरत है।

विद्या भवन की विभिन्न संस्थाओं की वैबसाईट चालू होने का संदेश सब तक पहुंचे और उसमें खास बातों की झलक लगातार मिलती रहे। वैबसाइट बनाने में कई लोगों की महत्ती भूमिका रही है। इनके उत्साह व जिम्मेदारी की भावना से ही यह सम्भव हुआ है। विद्या भवन परिवार में शामिल सभी के लिए संवाद व भागीदारी को बढ़ाना उपयोगी ही नहीं अनिवार्य भी है।

विद्या भवन की सभी संस्थाओं में सक्रियता बढ़ी है। पिछले वर्षों में लगातार विचार–विमर्श से संस्थाओं के नेतृत्व में अन्य संस्थाओं के प्रति समझ बढ़ी है। हम एक–दूसरे की बात ज्यादा ध्यान से सुनने लगे हैं और विषय के अनुरूप चर्चा को बढ़ा पाते हैं। साथियों की बात को समझने की क्षमता व मानने की भावना भी बढ़ी है। सभी साथियों में विद्या भवन के कार्य और चुनौतियों की समझ भी दिखाई देती प्रतीत होती है। हर संस्था में उद्देश्यों, गुणवत्ता और इसके लिए आवश्यक संसाधन और उन्हें जुटाने के तरीके आदि पर चर्चा होने लगी है। हालांकि हमारे सामने नई–पुरानी कई चुनौतियां हैं। फिर भी हम सब मिल–जुल कर इन पर विजय पा सकेंगे, ऐसा विश्वास है।

एच.के. दीवान

शैक्षिक सलाहकार, विद्या भवन सोसायटी

अंदर देखें...

- बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट रहा प्रदर्शन 3
- नर्सरी व वाणिज्य संकाय का शुभारंभ 4
- संग्रहालय, गुफाओं में ज्ञान की खोज 5
- सेनिटेशन पर शोध 7
- अध्यापक शिक्षा की चुनौतियां 8
- रुचिकर व उपयोगी शिक्षण के गुर सीखे 10
- मतदाता जागरूकता रैली 13
- पी.आर.ए. पर क्षमतावर्द्धन 15

खेल व सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में दिखा विद्या भवन के कार्यकर्ताओं का जोश

विद्या भवन के कार्यकर्ताओं को कार्यक्षेत्र से हट कर प्रतिभा दिखाने का मौका मिले और उनमें आपसी समझ व समन्वय बने इस उद्देश्य से सोसायटी की ओर से खेल–कूद व सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। विद्या भवन स्कूल के मैदान पर 13 अप्रैल सोसायटी अध्यक्ष रियाज़ तहसीन ने उद्घाटन करते हुए कार्यकर्ताओं को विद्या भवन की भावना के अनुरूप उत्साहपूर्ण भागीदारी का आह्वान किया। 14 अप्रैल की शाम विद्या भवन ऑडिटोरियम में मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां हुईं।

सम्पादकीय...

विद्या भवन 12 संस्थाओं का एक संकुल है जो शिक्षा, अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में कार्यरत है। 'विद्या भवन खोज-ख़बर' इन विभिन्न संस्थाओं द्वारा किए जाने वाले प्रयासों को आप तक पहुंचाने का एक माध्यम है। इसमें विद्या भवन की विभिन्न संस्थाओं में आयोजित होने वाले सेमीनार, कार्यशालाएं, विशेषज्ञों की वार्ताएं, फेकल्टी डवलपमेंट, खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे विभिन्न आयोजन शामिल हैं। लेकिन ऐसा महसूस हो रहा है कि अभी भी कई कार्यक्रम इसमें शामिल होने से छूट जाते हैं। जैसे शिक्षा की गुणवत्ता के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न संस्थाओं के वैचारिक मंथन एवं आत्म-चिंतन इसमें शामिल हो सकते हैं। संस्थाओं से अनुरोध है कि उन प्रयासों को 'विद्या भवन खोज-ख़बर' में सम्मिलित करें। विभिन्न संस्थाओं की गतिविधियां और विकसित सोच भविष्य में अवश्य ही हमारा मार्गदर्शन करेगी।

'विद्या भवन खोज-ख़बर' के इस अंक में प्रकाशित विभिन्न खबरों के बारे में आप अपने विचार हमें जरूर लिख भेजें।

अपने कार्यक्षेत्र में नवाचार या साथी कार्यकर्ताओं से साझा करने की कोई नई बात यदि आप इस पत्रिका में प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो कृपया vbkhojkhabar@gmail.com पर प्रेषित करें। आपके विचारों का हमें व सुधि पाठकों को इन्तजार रहेगा।

संस्थापक डॉ. मोहन सिंह मेहता का स्मरण

त्रैमास के दौरान, विद्या भवन के संस्थापक डॉ. मोहन सिंह मेहता की जयन्ती एवं पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। डॉ. मेहता की जयन्ती की पूर्व संध्या पर 19 अप्रैल को विद्या भवन ऑडिटोरियम में आई.आई.एम. उदयपुर के निदेशक प्रो. जनत शाह ने 'Improving Performance in Human Development through Re-designing Delivery Systems' विषय पर व्याख्यान दिया। 20 अप्रैल को विद्या भवन विद्या बन्धु संघ की ओर से जूनियर स्कूल प्रांगण में स्नेह मिलन समारोह आयोजित किया गया। डॉ. मेहता की पुण्यतिथि 25 जून को उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

विद्या भवन मानव संसाधन एवं विधि विभाग

विद्या भवन सोसायटी अपने कार्यकर्ताओं की क्षमता संवर्द्धन हेतु प्रयासरत है। सोसायटी की 'फैकल्टी डवलपमेंट कमेटी' ने विद्या भवन के समस्त कार्यकर्ताओं के लिए वर्ष पर्यन्त 21 दिवसीय प्रशिक्षण मॉड्यूल की रूपरेखा तैयार की। इसके तहत 15–16 दिन की संपर्क कक्षाओं सहित परियोजना–कार्य भी होगा। कमेटी माह के प्रथम व तृतीय शनिवार को बैठक करती है। मार्च की बैठकों में समान कार्य व प्रकृति के अनुसार विभिन्न संस्थाओं के चार उप–समूह बनाए गए। उप समूहों के सदस्यों ने अपनी संस्थाओं में कार्यकर्ताओं से बातचीत कर संस्थान की आवश्यकता के अनुसार क्षमता संवर्द्धन कार्यशालाओं की योजनाएं बनाईं।

विद्यालय समूहः विद्यालय समूह की 10 दिवसीय क्षमता संवर्द्धन कार्यशाला मई में हुई। शैक्षिक कार्यकर्ताओं को दो समूहों में बांटा गया। पूर्व में क्षमता संवर्द्धन कार्यक्रम में भाग ले चुके समूह के लिए आगे के मुद्दे रखे गए; नए कार्यकर्ताओं का दूसरा समूह बनाया गया। पहले पांच दिन शिक्षा से जुड़े मुद्दों जैसे सीखने–सिखाने व ज्ञान के निर्माण के तरीके, अच्छे स्कूल व कक्षा की अवधारणा, अनुशासन व अपनापन आदि मुद्दों पर चर्चा हुई। अगले पांच दिन भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व सूचना संप्रेषण की अवधारणाओं पर समझ बनाई गई। विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केन्द्र से प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री, प्रो. कमल महेन्द्रू, प्रसून कुमार, पुष्पराज राणावत, गिरीश शर्मा, अंजना राव, यशोधरा कनेरिया, कामिनी उपाध्याय, गिरिराज शर्मा, एल.एल. वैरागी संदर्भ व्यक्ति थे।

महाविद्यालयी समूहः विद्या भवन के गो. से. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, रूरल इंस्टीट्यूट व पॉलिटैक्निक के शैक्षिक कर्मचारियों का शोध–कार्य से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर जून में पांच दिवसीय प्रशिक्षण हुआ। प्रशिक्षण में शोध क्या हैं, अच्छे शोध के मायने, सहभागितापूर्ण व व्यवस्थित अवलोकन, वैज्ञानिक शोध, शोध में भाषा प्रवीणता, शोध में बाधक कारक, सम्बन्धित साहित्य लेखन, शोध प्रश्न आदि बिन्दुओं पर समझ बनाई गई। संदर्भ व्यक्ति प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री एवं प्रो. कमल महेन्द्रू ने शोध के बारे में संभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

समुदाय विकास संस्था समूहः विद्या भवन के कृषि विज्ञान केन्द्र, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता प्रशिक्षण केन्द्र, स्थानीय स्वशासन एवं उत्तरदायी नागरिकता संस्थान तथा पॉलिटेक्निक के सी.डी.टी.पी. के कार्यकर्ताओं के लिए पी.आर.ए. प्रशिक्षण हुआ। सहभागितापूर्ण ग्रामीण अध्ययन में दत्त संकलन, नक्शा बनाना आदि सिखाया गया। कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर संदर्भ व्यक्ति थे। विद्या भवन के हेमराज भाटी, प्रफुल्ल भटनागर, आर.एल. श्रीमाल, अनुप्रीता पुरोहित ने आयोजन में योगदान दिया।

अशैक्षणिक कर्मचारी समूहः आगामी त्रैमास में विद्या भवन की संस्थाओं के अशैक्षणिक कर्मचारियों के लिए कार्यशाला होगी।

21 दिवसीय क्षमतावर्द्धन पूर्ण करने पर प्रमाण–पत्र मिलेगा, जो स्व–आंकलन प्रपत्र के साथ जोड़ा जाएगा।

सलाहकार
हृदय कांत दीवान

संपादन
हिमालय तहसीन ✡ गिरीश शर्मा ✡ अंजना राव

ले–आउट, डिजाइनिंग
एस.एम. इकराम

विद्या भवन सीनियर सैकण्डरी स्कूल

बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट रहा प्रदर्शन

विद्यालय द्वारा वार्षिक परीक्षाओं के क्रम में बोर्ड परीक्षाएं (10वीं, 12वीं) मार्च में आयोजित की गई। कक्षा–6, 7, 8, 9 व 11 की परीक्षाएं अप्रैल में आयोजित की गई।

कक्षा–12 के कला व वाणिज्य वर्ग का परिणाम शत–प्रतिशत रहा। **विज्ञान वर्ग** का परीक्षा परिणाम 83.33 प्रतिशत रहा।

विभिन्न वर्गो में प्रथम स्थान पर रहे छात्र–छात्राएं निम्नलिखित हैं:

कला वर्ग में भावना डांगी (77.40 प्रतिशत), **वाणिज्य वर्ग** में शालू चौहान (84.00 प्रतिशत) एवं **विज्ञान वर्ग** में अभिषेक सुथार व रानू शर्मा (दोनों 79.20 प्रतिशत) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

- कला वर्ग के 20 छात्र–छात्राओं में से 7 विद्यार्थी प्रथम व 13 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए।
- वाणिज्य वर्ग के 28 विद्यार्थियों में से प्रथम श्रेणी में 20, द्वितीय श्रेणी में 7 व तृतीय श्रेणी में 1 उत्तीर्ण हुआ।
- विज्ञान वर्ग के 29 विद्यार्थियों में से प्रथम श्रेणी में 14 व द्वितीय श्रेणी में 11 उत्तीर्ण हुए।

दसवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम 96.15 प्रतिशत रहा। परीक्षा में 78 छात्र–छात्राएं बैठे थे जिनमें से प्रथम श्रेणी में 28, द्वितीय श्रेणी में 39 व तृतीय श्रेणी में 8 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए।

जोर–शोर से किया गया स्कूल का प्रचार

विद्यालय में विद्यार्थियों का नामांकन बढ़ाने के उद्देश्य से 70 बैनर व 50,000 पैम्फलेट अखबारों के माध्यम से पूरे शहर में वितरित किए गए। विद्यालय की प्रचार–प्रसार समिति के अध्यापकों द्वारा स्थान–स्थान पर पैम्फलेट व बैनर लगाए गए। उन्होंने घर–घर जाकर अभिभावकों से सम्पर्क किया, विद्या भवन की विशिष्टताओं की जानकारी दी और बच्चों को विद्या भवन में प्रवेश कराने के लिए प्रेरित किया गया।

रुचिकर शिक्षण पर शिक्षकों का मंथन

फैकल्टी डवलपमेंट कमेटी द्वारा शिक्षकों के क्षमतावर्द्धन कार्यशाला में विद्यालय के सभी शिक्षकों ने भाग लिया।

पहले पांच दिनों तक शिक्षण कौशल व उससे जुड़े विभिन्न तथ्य, सहज एवं रुचिकर शिक्षण के बारे में चर्चा की गई। इसके उपरान्त पांच दिनों तक सभी शिक्षकों ने विषयवार (भाषा, गणित, विज्ञान एवं कम्प्यूटर शिक्षण) विभिन्न अवधारणाओं पर समूहों में चर्चा की। शिक्षकों ने अपनी जिज्ञासाओं को प्रश्नोत्तर रूप में प्रस्तुत किया तथा अपनी समझ को और विकसित करने का प्रयास किया।

वर्कशीट्स से शिक्षण

आर.टी.ई. के तहत निजी विद्यालयों को पुस्तकें अपने स्तर पर उपलब्ध करवाने पर रोक लगने के कारण अभिभावकों को बाजार से खुद पुस्तकें खरीदनी पड़ीं। इस प्रक्रिया में सभी बच्चों के पास किताबों आने में एक माह की देरी हुई। इस एक माह (अप्रैल) में सभी विषयाध्यापकों ने कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों को वर्कशीट्स् तथा अन्य गतिविधियों द्वारा पठन कार्य करवाया। शिक्षकों ने स्वयं भी शिक्षण सामग्री बनाई तथा बच्चों के साथ उसे क्रियान्वित भी किया।

जूनियर स्कूल में नव–निर्माण शुरू

विद्या भवन सोसायटी व विद्या भवन विद्या बंधु संघ द्वारा बच्चों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए जूनियर परिसर में नवनिर्माण एवं मरम्मत का कार्य करवाया जा रहा है। पूर्व निर्धारित योजनानुसार शौचालय, कक्षा–कक्ष की फर्शी व पानीघर का निर्माण प्रारम्भ किया गया, साथ ही अन्य मरम्मत कार्य भी किए जा रहे हैं।

नन्हें–मुन्नों ने देखी खेती और तालाब

नर्सरी के बच्चों को शैक्षणिक भ्रमण के लिए विद्या भवन कृषि विज्ञान केन्द्र ले जाया गया। बच्चों ने नाना प्रकार के पौधों व फूलों को देखा तथा भरपूर आनंद उठाया। उसके बाद गोवर्धनसागर पाल पर ले जाया गया, जहां उन्हें अलग–अलग पानी के निकायों की जानकारी के साथ–साथ पानी का उपयोग व पानी को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए क्या–क्या करना चाहिए आदि के बारे में जानकारियां दी गईं।

उषा किरण विद्यालय की नई प्राचार्य

उषा किरण ने विद्यालय की प्राचार्य के रूप में पदभार ग्रहण किया। उन्होंने बिरला सी.

सै. पब्लिक गर्ल्स स्कूल, पिलानी में बतौर शिक्षक कार्य प्रारम्भ किया तथा वहीं प्राचार्य, तकनीकी प्रशिक्षक और केन्द्रीय कार्यालय में समन्वयक की जिम्मेदारियां निभाईं। उन्होंने 17 वर्षों के कार्यकाल में बाल केन्द्रित शिक्षा को अपनाते हुए विद्यालय को उत्कृष्ट परिणामों तक पहुंचाया। उनका मानना है कि शैक्षिक कार्यक्रम चुनौतीपूर्ण होना चाहिए एवं प्रत्येक बच्चे को उसके पूर्व ज्ञान व अनुभवों के आधार पर पाठ्यक्रम से जोड़ते हुए सदैव नए विचारों व अन्वेषण के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इस तरह विद्यार्थी बदलते समाज में जिम्मेदार नागरिकता का कौशल प्राप्त कर सकेंगे।

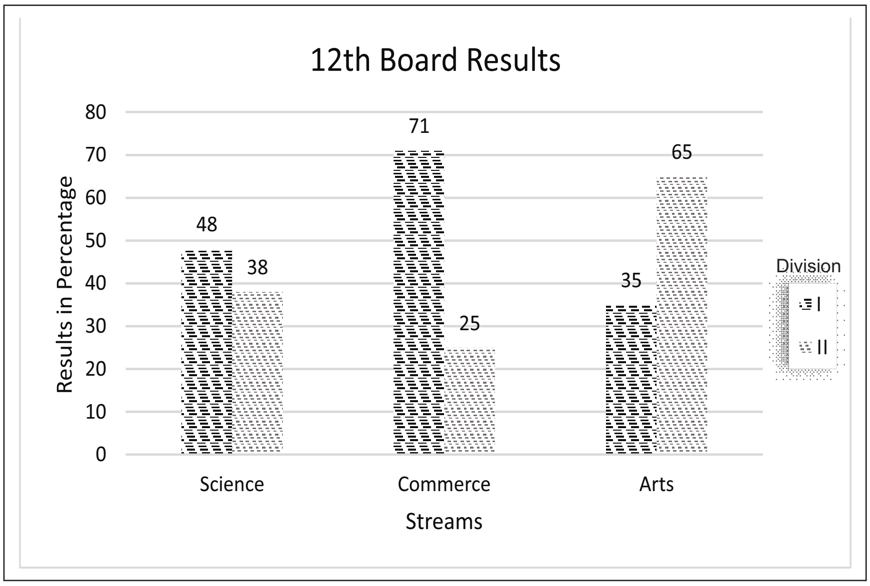

विद्या भवन सीनियर सैकण्डरी स्कूल, रामगिरि

वर्षभर के परिश्रम की परीक्षा

दसवीं एवं बारहवीं बोर्ड की परीक्षाएं मार्च में सम्पन्न हुईं। इसमें सीनियर सैकण्डरी की दुर्गा डुलावत 72.20 प्रतिशत के साथ प्रथम तथा पूजा मेघवाल 69.60 प्रतिशत के साथ द्वितीय स्थान पर रहीं। सैकण्डरी परीक्षा में खुशबू राव 71.17 प्रतिशत के साथ प्रथम तथा नरेन्द्र सिंह झाला 61.67 प्रतिशत के साथ द्वितीय स्थान पर रहे। पहली से ग्यारहवीं कक्षा की परीक्षाएं 27 मार्च से 8 मई तक करवाई गईं। सभी कक्षाओं का परिणाम शत प्रतिशत रहा।

नर्सरी व वाणिज्य संकाय का शुभारंभ

विद्यालय में इस सत्र से नर्सरी तथा के. जी. कक्षाएं शुरू होने जा रही हैं। इसके लिए नवीन कक्षा–कक्षों का निर्माण करवाया जा रहा है तथा बच्चों के सीखने में आवश्यक व मनोरंजक सामग्री जुटाई जा रही है। विद्यालय को सीखने–सिखाने के केन्द्र के रूप में आकर्षक व प्रभावशाली बनाया जा रहा है, ताकि अभिभावकों का विद्यालय के प्रति रुझान बढ़े और वे अपने बच्चों को यहां प्रवेश दिलाएं। शाला का उद्देश्य बच्चों को ढेर सारी सुविधाएं तथा शिक्षण का खुला माहौल प्रदान करना है।

विद्यालय में इस सत्र से वाणिज्य (कॉमर्स) विषय शुरू किया गया है। इसके लिए सभी तैयारियां की गई हैं। बोर्ड के अधिकारियों द्वारा विद्यालय का निरीक्षण व अवलोकन कर विद्यालय को कॉमर्स संकाय खोलने के सभी मानकों पर खरा पाया गया है। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के सहयोग से आसपास के क्षेत्रों में प्रचार किया गया। इससे कॉमर्स के विद्यार्थियों के प्रवेश प्रारम्भ हो गए हैं। जितेन्द्र सिंह देवड़ा व दिनेश को इस विषय के शिक्षक के पद पर नियुक्त किया गया।

गांव–गांव में जनसम्पर्क

नर्सरी, के.जी. व कॉमर्स में नवीन प्रवेश के लिए शिक्षकों ने आस–पास के गांवों में जनसम्पर्क किया। ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान विद्यालय के शिक्षकों ने शिक्षा से वंचित बच्चों को चिह्नित कर घर–घर सम्पर्क किया तथा अभिभावकों को अपने बच्चों को विद्यालय से जोड़ने के लिए प्रेरित किया।

'काबुलीवाला' के जरिए बेटियों की बात

विद्यालय में वार्षिकोत्सव मई में मनाया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत रविन्द्र नाथ टैगोर के प्रसिद्ध उपन्यास 'काबुलीवाला' पर आधारित नाटक का मंचन किया गया। मिनी का किरदार कक्षा–6 की संध्या सुथार ने तथा काबुलीवाला का किरदार कक्षा–9 के महेन्द्र डांगी ने निभाया। नाटक में अनेक नृत्य व गीत शामिल किए गए। "बेटियां हमारी धरोहर है" का संदेश भी दिया गया। छोटे बच्चों ने नर्सरी राइम्स गाते हुए नृत्य किया, देश भक्ति गीतों पर प्रस्तुतियां दी गईं। आठवीं कक्षा तक के प्रत्येक विद्यार्थी ने इस कार्य क्रम में भाग लिया। मुख्य अतिथि जे. के. रेबारी थे व अध्यक्षता सोसायटी अध्यक्ष रियाज तहसीन ने की।

रोचक शिक्षण पर विमर्श

विद्या भवन की फैकल्टी डवलपमेंट कमेटी की ओर से हुई कार्यशाला में शिक्षकों ने अपने कार्य में गुणवत्ता लाने के गुर सीखे। कार्यशाला में अच्छे स्कूल, अच्छी कक्षा, एन.सी.एफ. 2005 में वर्णित शिक्षा का उद्देश्य तथा अन्य शैक्षिक दस्तावेजों पर चर्चा की गई। गतिविधि आधारित शिक्षण द्वारा कक्षा–कार्य को रोचक कैसे बनाया जा सकता है जैसे मुद्दों पर विमर्श किया गया। कार्यशाला के निष्कर्षों में शिक्षण में बच्चों की भागीदारी, बच्चों से सतत संवाद और उनके पूर्वज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान देने का प्रयास प्रमुख थे।

चहुंमुखी विकास की आयोजना

ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान शिक्षकों ने विद्यालय की आगामी कार्य–योजना बनाई। शाला के चहुंमुखी विकास को ध्यान में रखते हुए योजना में परीक्षा परिणाम में सुधार, संभाव्य व उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग पर ध्यान देना, विद्यालय में प्रजातांत्रिक वातावरण तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन आदि विषयों को शामिल किया गया।

विद्या भवन खेलकूद प्रतियोगिता में विद्या भवन सीनियर सैकण्डरी स्कूल, रामगिरि के कम्प्युटर अध्यापक इसरार अहमद ने कैरम प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

विद्या भवन पब्लिक स्कूल

www.vbpublicschool.org

शत–प्रतिशत रहा बोर्ड का परिणाम

इस वर्ष (2013–14) में स्कूल की कक्षा दसवीं का केन्द्रीय बोर्ड परीक्षा–परिणाम शत–प्रतिशत रहा। कक्षा में प्रथम स्थान गौरव शर्मा (9.6 सी.जी.पी.ए.), दूसरा स्थान दिव्यांश भण्डारी (8.8 सी.जी.पी.ए.) एवं तृतीय स्थान अंकिता जोशी (8.2 सी.जी.पी.ए.) हासिल किया। हिन्दी विषय का परीक्षा परिणाम सर्वश्रेष्ठ रहा, जिसमें सभी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए।

नवीन प्रवेश का सिलसिला बढ़ा

विद्यालय के समस्त शिक्षकगणों एवं विद्यालय प्रबन्धन के अथक प्रयासों के फलस्वरूप इस सत्र में 84 नवीन छात्र–छात्राओं का प्रवेश हुआ है। कक्षा–1 से 5 तक 52 विद्यार्थी, कक्षा–6 से 8 में 15 विद्यार्थी एवं कक्षा 9 से 12 में 17 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है।

संगीत व कला की कक्षाएं प्रारम्भ

विद्यालय में संगीत एवं कला की कक्षाओं का नियमित संचालन प्रारम्भ हो गया है। इन विषयों पर अलग से कक्षाओं का आवंटन कर अध्यापन करवाया जा रहा है। संगीत की कक्षाओं को और प्रभावी तथा विद्यार्थियों में रुचि बढ़ाने के लिए संगीत अध्यापक की नियुक्ति की गई है।

सपोर्ट कक्षाओं का संचालन

कक्षा–9 व 10 के विद्यार्थियों की क्षमतावर्द्धन के लिए सपोर्ट कक्षाएं लगाई गईं। इन कक्षाओं को दो वर्गों में विभाजित किया गया। प्रतिभावान छात्रों के लिए कक्षा की अलग व्यवस्था की गई ताकि उनका और अधिक शैक्षिक उन्नयन हो सके। औसत छात्रों के लिए अलग कक्षा की व्यवस्था की गई, जिसमें उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके।

कैमेस्ट्री पर कार्यशाला में हिस्सेदारी

दिल्ली पब्लिक स्कूल द्वारा आयोजित "कैमेस्ट्री पोप्यूलराइजेशन कार्यशाला" में विज्ञान शिक्षिका अमिता सोनी के साथ कक्षा 6–10 तक के बच्चों ने हिस्सा लिया। कैमेस्ट्री विषय को रुचिकर बनाने, नई खोज व वैज्ञानिकों के बारे में पता लगाने की जानकारी प्राप्त की।

विश्व कल्याण में शिक्षक की भूमिका

"विश्व कल्याण में आपकी भूमिका" विषय पर मई में अध्यापकों के लिए कार्यशाला स्कूल में आयोजित हुई। मालदीव में सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में कार्यरत शाहिदा शौकत ने छात्रों में नैतिक मूल्यों एवं मानवीय गुणों के विकास में अध्यापकों की भूमिका एवं नेतृत्व क्षमता के विकास के लिए सतत् प्रयास करने की आवश्यकता व तरीकों से अवगत कराया।

कहानी सुन आनंदित हुए बच्चे

स्कूल में प्राथमिक कक्षाओं में भाषा पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए कहानी वाचन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य बच्चों में कल्पना शक्ति की नई उड़ान देने, मनोरंजन के साथ एकाग्रचित्तता का संवर्द्धन करना था। विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केन्द्र से संगीता दवे ने बच्चों को एक चीनी लड़के के बड़े नाम पर आधारित कहानी सुनाई। उन्होंने हाव–भाव व भाषा शैली में उतार–चढ़ाव के साथ कहानी प्रस्तुत की, जिसे बच्चों ने रुचि एवं कौतूहल से सुना व आनन्दित हुए। तत्पश्चात शिक्षकों ने कहानी सुनाने के तरीकों के बारे में चर्चा की।

कठिन नहीं है गणित विषय

गणित सीखने–सिखाने के बारे में प्रचलित धारणाओं पर विद्यालय की पूर्व प्राचार्य अंजलि गुप्ते ने कहा कि गणित विषय के बारे में हम कई गलत धारणाएं बना लेते हैं और आगे भी वह धारणाएं चलती रहती हैं, जैसे गणित एक मुश्किल विषय है, केवल होशियार बच्चे ही गणित बेहतर सीख पाते हैं इत्यादि। अंजलि ने बताया कि हर व्यक्ति में गणित विषय पढ़ने की क्षमता होती है; जरूरत है कि गणित को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाया जाए और रुचिकर बनाया जाए। उन्होंने शिक्षकों के साथ कक्षा में गणितीय समस्याओं का निराकरण कैसे करें, इस बारे में भी चर्चा की।

तीसरी आंख से आंकलन

दिल्ली स्थित मूल्यांकन एजेंसी इ.क्यू.एफ.आई. द्वारा किए गए आंकलन में कक्षा 3, 5 व 7 में हिन्दी व गणित विषय में सत्र 2013–14 के 'बेसलाईन' की तुलना में 'एण्डलाईन' का परिणाम अच्छा रहा परन्तु भाषा में बच्चों की श्रवण क्षमता एवं रचनात्मक लेखन क्षेत्र में और कार्य करने की आवश्यकता महसूस की गई है।

लाइब्रेरी एजुकेटर कोर्स में भागीदारी

विद्यालय के शिक्षक ललित पूर्बिया एवं चन्द्रकान्ता नागदा ने छः मास के पुस्तकालय प्रशिक्षण में भाग लिया। विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केन्द्र में हुए प्रशिक्षण में पुस्तकालय से बच्चों के लिखने–पढ़ने में मदद पर समझ बनाई गई। कक्षा–कक्षों में संदर्भ पुस्तकों व पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकों की रचनात्मक गतिविधियाँ कराई गईं। कक्षा–पुस्तकालय को सक्रिय बनाने, बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए कहानी वाचन कराना, स्वरचित कहानी हेतु प्रेरित करने के अभ्यास किए गए।

संग्रहालय, गुफाओं में ज्ञान की खोज

विद्यालय के कक्षा 6 से 8 की छात्र–छात्राएं आयड़ संग्रहालय गए। संग्रहालय में संजोए अवशेषों के आधार पर बच्चों ने चार हजार वर्ष पुरानी आहाड़ सभ्यता के बारे में अपनी समझ को विकसित किया। इसी तरह, कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थी झामरकोटड़ा स्थित 'स्ट्रोमेटोलाईट–पार्क' में भ्रमण पर गए। भ्रमण का उद्देश्य बच्चों को क्षेत्र अवलोकन व प्रश्नों द्वारा खोजबीन करने की प्रक्रिया में सम्मिलित करना था। बच्चों ने वहां की गुफाओं में फॉसिल्स देखे तथा प्रकृति के प्राचीन व अद्भुत जीवन का अनुभव किया। साथ ही चूना पत्थर की गुफाओं की दरारों व छतों से लगातार टपकते पानी से निर्मित चट्टानों की विभिन्न संरचनाओं का नजदीक से अवलोकन किया। विद्यार्थियों को "फारमेशन ऑफ लाइमस्टोन" का प्रोजेक्ट दिया गया, जिसे उन्होंने भ्रमण के अनुभव से अर्जित ज्ञान के आधार पर पूरा किया।

विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट

www.vbriudaipur.org

राजगुरु विश्वविद्यालय की कोर्स कमेटी में शामिल

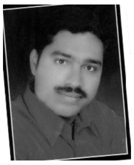

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की ओर से विभिन्न पाठ्यक्रम समितियों का गठन किया गया है। विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग की पाठ्यक्रम कमेटी में महाविद्यालय के डॉ. मनोज राजगुरु को शामिल किया गया है। वे यहां राजनीति विज्ञान के प्राध्यापक हैं।

उमंग और उल्लास भरी शिरकत

शैक्षणिक और सहशैक्षणिक कर्मचारियों के आपसी संबंधों को प्रगाढ़ बनाने, उनमें सौहार्द्र विकसित करने तथा स्वस्थ मनोरंजन के उद्देश्य से विद्या भवन सोसायटी द्वारा 13–14 अप्रेल को आयोजित खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट के सभी सदस्यों ने उमंग और उल्लास से बढ़–चढ़ कर भागीदारी की और कई स्पर्द्धाओं में सफलता प्राप्त की।

गुणवत्ता सुधार पर मंथन

महाविद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने, विद्या भवन के उद्देश्यों और सिद्धान्तों के अनुरूप आधुनिक समय में नई संभावनाओं को तलाशने, विद्यार्थियों और संकाय सदस्यों के उन्नयन एवं विकास जैसे कई विषयों पर मंथन के लिए अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साझे में एक बैठक हुई। बैठक में फाउण्डेशन के दिलीप रांझेकर व राजेश शाह तथा सोसायटी के शैक्षिक सलाहकार डॉ. एच. के. दीवान ने संकाय सदस्यों के साथ विचार–विमर्श किया।

शोध के कारक व प्रविधियों को जाना

विद्या भवन सोसायटी की फैकल्टी डवलपमेंट कमेटी की ओर से 'रिसर्च मेथडोलॉजी' पर कार्यशाला में महाविद्यालय के 20 संकाय सदस्यों ने भाग लिया। विभिन्न सत्रों में प्रतिभागियों ने जहाँ शोध के महत्व, कारक और प्रविधियों के बारे में जाना, वहीं प्रश्नोत्तर के माध्यम से अपनी शोध संबंधी जिज्ञासाओं को शान्त किया।

खाद्य सुरक्षा व पी.आर.ए. प्रशिक्षण में शामिल हुई आंगनवाड़ी प्रशिक्षक

'पूरक पोषाहार में खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने और खाद्य सुरक्षा मानकों के रख–रखाव' पर नई दिल्ली की एन.आई.पी.सी.सी.डी. की ओर से मई में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। विद्या भवन आंगनवाड़ी प्रशिक्षण केन्द्र की दो प्रशिक्षकों, वर्षा चौधरी एवं मधु धायभाई, ने प्रशिक्षण में भाग लिया।

इसी तरह, विद्या भवन कृषि विज्ञान केन्द्र में सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (पी.आर.ए.) पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण में केन्द्र की संचालिका हरिबाला शर्मा ने भाग लिया।

विद्या भवन प्रकृति साधना केन्द्र

www.vbpsk.org

दिशा ज्ञान, ट्रैकिंग एवं जैव–विविधता का अध्ययन

आलोक स्कूल फतहपुरा के 72 छात्र–छात्राओं ने 11 अप्रैल को केन्द्र पर नेचर कैम्प में भाग लिया। नेचर–कैम्प में विषय विशेषज्ञ गिरीश शर्मा के निर्देशन में विद्यार्थियों ने ग्लोबल पोज़िशनिंग सिस्टम (जी.पी.एस.) के माध्यम से दिशा, दूरी, ऊंचाई, धरातल की स्थिति आदि को ज्ञात करना सीखा। डॉ. आनन्द सिंह जोधा ने ट्रेकिंग के दौरान केन्द्र में विभिन्न पेड़–पौधों की उपयोगिता के बारे में विद्यार्थियों को अवगत कराया। इस दौरान आलोक संस्था की प्राचार्य एवं स्टाफ भी उपस्थित था।

जाना पक्षियों का आवास

शहर के सेंट एंथोनी, सेन्ट ग्रिगोरियस, सेन्ट्रल अकेडमी, सेन्ट मेरिज तथा आलोक स्कूल के 64 छात्र–छात्राओं ने 27 अप्रैल को केन्द्र पर नेचर–ट्रिप में भाग लिया। पक्षी विशेषज्ञ विनय दवे ने विभिन्न पक्षियों के घोंसलों की पहचान कराई। पेड़–पौधों को काटने से पक्षी आवास में बदलाव ला रहे हैं। धीरे–धीरे इनकी कई प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर हैं। नेचर–ट्रीप का आयोजन इन्डियन एन्वायरमेन्ट सोसायटी ने किया था।

रात्रि–शिविर में खगोलीय अध्ययन

विद्या भवन सोसायटी में कार्यरत विभिन्न संस्थाओं से करीब 22 सदस्यों ने 20 मई को रात्रि शिविर में भाग लिया। प्रकृति के सान्निध्य में रहकर सदस्यों ने खगोलीय अध्ययन किया और प्रातःकालीन ट्रैकिंग का लुत्फ उठाया। उन्होंने कई प्रकार की वनस्पतियों की उपयोगिता जानी।

पर्यावरण संतुलन के सतत प्रयास हों

विश्व पर्यावरण दिवस की थीम 'Raise your voice, not the sea level' पर 5

जून को केन्द्र पर गोष्ठी हुई। प्रो. अरुण चतुर्वेदी, एस.पी. गौड़, डॉ. आर.के. गर्ग, एस.एल. भण्डारी, जे.पी. श्रीमाली ने पर्यावरण संतुलन पर विचार व्यक्त किए। पक्षी विशेषज्ञ विनय दवे ने घर–घर में मिलने वाली गौरैया पक्षी के लुप्त होने की जानकारी दी और इन नन्हें पक्षियों के संरक्षण के उपाय बताए। विद्या भवन सोसायटी के अध्यक्ष रियाज तहसीन ने कहा कि पर्यावरण एक दिन में नहीं सुधर सकता, इसके लिये लगातार सकारात्मक प्रयास करते रहना जरूरी है। सुखाड़िया विश्वविद्यालय के भूगोल विभागाध्यक्ष प्रो. विनोद अग्रवाल ने कहा कि राजस्थान पर्यावरण के रख–रखाव में काफी पिछड़ा है। उन्होंने इस स्थिति को बदलने हेतु आवश्यक प्रयासों को रेखांकित किया।

विद्या भवन पॉलिटैक्निक कॉलेज

www.vbpolytechnic.org

सेनिटेशन पर शोधः राष्ट्रीय नीति के क्रियान्वयन का आंकलन

सेन्टर फॉर पॉलिसी रिसर्च, नई दिल्ली व विद्या भवन सोसायटी के सहयोग से "स्केलिंग सिटी इंस्टीट्यूशन्स ऑफ इण्डियाः सेनिटेशन" विषयक शोध किया जा रहा है। शोध का उद्देश्य नगरीय शासन संस्थाओं के समक्ष नेशनल अरबन सेनिटेशन पॉलिसी के लक्ष्य प्राप्त करने में आई चुनौतियों एवं अवसरों की उपलब्धता को समझना है। शोध हेतु अनेक शहरों में से उदयपुर का चयन किया गया है। भारत सरकार के शहरी विकास मंत्रालय द्वारा करवाए जा रहे इस शोध से देश की सेनिटेशन पॉलिसी के शहरी क्रियान्वयन में मदद मिलेगी। शोध समन्वयक अनिल मेहता द्वारा पॉलिटैक्निक प्राध्यापकों की टीम बनाई गई है।

टैक्नोबीट्स्: युवा बनें हुनरमंद और सृजनशील

संस्थान का तीन दिवसीय वार्षिक समारोह **'टेक्नोबीट्स्'** अप्रैल में हुआ। कार्यक्रम में ट्रेजर हण्ट क्विज, कविता रचना, पोस्टर, एकल गान, नृत्य, समूह नृत्य, नेल–आर्ट, हेयर स्टाइलिंग प्रतियोगिताएं हुईं। विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा व रचनात्मकता प्रदर्शित करने के साथ नेतृत्व क्षमता, टीम स्पिरिट जैसे गुणों के विकास का मौका मिला। राजनीतिक विज्ञान के प्रो. अरुण चतुर्वेदी, सुखाड़िया विश्वविद्यालय की प्रो. मीना गौड़, पूर्व विद्यार्थियों इंजीनियर बी.एल. मंत्री, से.नि. अधीक्षण अभियंता जी.पी. सोनी, सोसायटी के व्यवस्था सचिव एस. पी. गौड़, डॉ.मोहन सिंह मेहता मेमोरियल ट्रस्ट के सचिव नन्दकिशोर शर्मा ने सृजनशील, कलात्मक एवं हुनरमंद बनने के लिए युवाओं का आह्वान किया।

चार पीढ़ियों के अभियंताओं का मिलन

संस्थान में 1964 व 1989 में उत्तीर्ण हुए विद्यार्थियों की "एलुमिनी–मीट" मई में हुई। पूर्व विद्यार्थी संघ द्वारा आयोजित समारोह में अभियंताओं ने अपने पुराने साथियों से कॉलेज की यादें ताजा कीं। इस दौरान प्रसिद्ध साहित्यकार नंद चतुर्वेदी का अभिनंदन किया गया। वे संस्थान के पूर्व शिक्षक रहे हैं।

1964 बैच के विद्यार्थी और वर्तमान में संगम इंडिया लिमिटेड के प्रबंध निदेशक रामपाल सोनी ने विद्यार्थियों को कठिनाइयों में हिम्मत से सामना करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कॉलेज समय के अनुभव साझा किए, जरूरतमंद प्रतिभावान विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप देने की घोषणा की तथा संस्था के सहयोग के लिए एक लाख रुपये का चेक भेंट किया। 1984 बैच के अभियंताओं की तरफ से कॉलेज को वाटर–प्यूरीफायर भेंट किया गया। पूर्व प्राचार्य एवं वर्तमान में विधायक वासुदेव देवनानी, पूर्व विद्यार्थी संघ के संस्थापक अध्यक्ष बी.एल. मंत्री, अध्यक्ष जी.पी. सोनी, विद्या भवन सोसायटी के अध्यक्ष रियाज तहसीन, प्राचार्य अनिल मेहता ने संस्था के विकास हेतु पूर्व विद्यार्थियों का आह्वान किया।

व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केन्द्र व हजीरा एल.एन.जी एण्ड पोर्ट के सहयोग से सूरत के हजीरा व आसपास के गांवों से 27 युवाओं को हाउस वायरिंग प्रशिक्षण दिया जा रहा है। 3 माह का यह प्रशिक्षण पूर्णतया आवासीय है। युवाओं को हाउस वायरिंग की जानकारी के साथ मोटर रिवाइंडिंग व विद्युत उपकरणों की मरम्मत का कार्य भी सिखाया जा रहा है। प्रशिक्षण में सैद्धांतिक व प्रायोगिक प्रशिक्षण एवं उद्योगों में प्रशिक्षण देने के साथ ही गणित, अंग्रेजी, कम्प्यूटर, व्यक्तित्व विकास व उद्यमिता जैसे विषयों का ज्ञान देना भी शामिल है।

संवाद क्षमता पर कार्यशाला प्रस्तावित

प्राध्यापक क्षमता संवर्धन हेतु महाविद्यालय में इन्स्ट्रक्शनल प्लानिंग एण्ड डिलीवरी (ICT आधारित कार्यक्रम) मॉड्यूल–IV कम्युनिकेशन स्किल्स पर पाठ्यक्रम कार्यशाला जुलाई में होगी। यह कार्यशाला नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग एण्ड रिसर्च, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित की जाएगी।

51 यूनिट रक्तदान

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई, महावीर इन्टरनेशनल, डॉ. मोहन सिंह मेहता मेमोरियल ट्रस्ट एवं रोटरी क्लब उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में रक्तदान शिविर लगा। विद्यार्थियों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा 51 यूनिट स्वैच्छिक रक्तदान किया गया। महाराणा भूपाल मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल की टीम ने रक्त संग्रहण किया। महावीर इन्टरनेशनल के अध्यक्ष बी.एस. भण्डारी, पूर्व मुख्य अभियंता आर. के. चतुर, रोटरी कलब के अध्यक्ष बी.एल. मेहता, डॉ. मोहन सिंह मेहता मेमोरियल ट्रस्ट के अध्यक्ष विजय सिंह मेहता ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया।

विद्या भवन गोविन्द राम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय

व्यक्ति को मुक्ति दिलाने वाली हो शिक्षा- प्रो. सुदर्शन अय्यंगर

महाविद्यालय एवं स्नातक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में श्री पी.एल. श्रीमाली व्याख्यानमाला के तहत "वर्तमान संदर्भ में अध्यापक शिक्षा की चुनौतियां" पर गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद के कुलपति प्रो. सुदर्शन अय्यंगर मुख्य वक्ता थे। उन्होंने कहा कि गांधीजी के अनुसार शिक्षा व्यक्ति को मुक्ति दिलाने वाली होनी चाहिए। शिक्षा की यह संकल्पना अब लुप्त हो गई है। इस संकल्पना को समझना और व्यापक रूप में स्थापित करना शिक्षा जगत की बड़ी चुनौती है।

आज की शिक्षा मानव को बहुआयामी कौशल–युक्त यंत्र बना रही है। शिक्षा का मूल उद्‌देश्य व्यक्ति को मानवतावादी बनाना और मूल्यों के प्रति चेतना विकसित करना है। मानवता के विचार के साथ ही कर्तव्य का बोध होना और इसे व्यवहार में लाना जरूरी है। अध्यापक शिक्षा में इस दिशा में प्रयास करने होंगे।

उन्होंने शिक्षा और व्यापार की तुलना करते हुए कहा कि शिक्षकों को मानसिक तौर पर वानप्रस्थी होना चाहिए। विद्यार्थियों को भी गांधीजी की पुस्तक 'हिन्द स्वराज' पढ़नी चाहिए और उसकी प्रासंगिकता समझनी चाहिए। प्राथमिक एवं अनिवार्य शिक्षा की बात गांधी ने स्वतंत्रता से कुछ वर्षों पहले ही संकल्पित कर ली थी, किन्तु आजादी के छः दशक बाद भी हम इस दिशा में प्रयत्नरत ही हैं। तत्व के बिना तंत्र आधारित शिक्षा व्यवस्था व्यर्थ है और इस बारे में गंभीरता से सोचना होगा।

मतदाता जागरूकता के लिए रेनबो–वीक

लोकसभा चुनावों के लिए मतदाताओं में जागरूकता हेतु महाविद्यालय में रेनबो–वीक का आयोजन किया गया। निर्वाचन आयोग के कार्यक्रम के तहत अप्रेल में हुए आयोजन में महाविद्यालय के छात्राध्यापकों ने फतहसागर की पाल पर 'जागो मतदाता' थीम पर रंगोली प्रतियोगिता में भाग लिया। अगली शाम विद्यार्थी एवं प्राध्यापक फतहसागर की पाल पर एकत्रित हुए तथा महाविद्यालय तक मतदान जागरूकता का संदेश देते हुए कैंडल मार्च किया। रेनबो वीक के तहत मैराथन एवं मानव श्रृंखला में विद्या भवन की सभी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और नागरिकों को मतदान का संदेश दिया।

आंतरिक सैद्धांतिक परीक्षा

छात्राध्यापकों में सीमित समय में उपयुक्त गति से लिखने का अभ्यास, पाठ्यक्रम का दोहरान व उनके बोध को विकसित करने के लिए 12 से 24 मई तक महाविद्यालय में आंतरिक सैद्धांतिक परीक्षा का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित प्रारूप के अनुरूप प्रश्न–पत्रों के जरिए विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया गया।

विद्या भवन के खेलकूद व सांस्कृतिक कार्यक्रम में भागीदारी

विद्या भवन सोसायटी द्वारा आयोजित दो दिवसीय खेल–कूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में महाविद्यालय के कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। महाविद्यालय की प्रियंका रावल चम्मच रेस में प्रथम व मनीषा शर्मा द्वितीय रहीं। गिरीश शर्मा साईकिल रेस में द्वितीय रहे। बैडमिंटन में प्रियंका रावल द्वितीय तथा रस्साकशी में खीमाराम काक की टीम विजय रही। सांस्कृतिक कार्यक्रम में महाविद्यालय के निदेशक प्रो. एम.पी. शर्मा ने हारमोनियम व गिरीश शर्मा ने माउथ ऑर्गन बजाया तथा प्रियंका रावल ने नृत्य प्रस्तुत किया।

वार्षिकोत्सव व पुरस्कार वितरण

महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव व पुरस्कार वितरण समारोह विद्यार्थियों को वर्ष भर के उनके कार्यक्रमों के सकारात्मक विश्लेषण एवं आने वाली परीक्षाओं की शुभकामना देने के रूप में मनाया गया। विद्यार्थियों को वर्ष भर की गई सहशैक्षिक गतिविधियों यथा खेलकूद, सांस्कृतिक व साहित्यिक कार्यक्रमों में सहभागिता व विशेष स्थान अर्जित करने पर महाविद्यालय की ओर से पुरस्कृत किया गया। इससे पूर्व परिषद् बैठक आयोजित की गई। विद्यार्थियों ने अपने परिषद् सुपरवाईजर से चर्चा एवं तैयारी की। तत्पश्चात् महाविद्यालय के सभागार में गायन, नृत्य आदि रंगारंग प्रस्तुतियां दी गईं। महाविद्यालय के निदेशक प्रो. एम. पी. शर्मा ने विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया एवं उन्हें उज्जवल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम का समापन समूह गीत के साथ हुआ।

सी.टी.ई. कार्यक्रम के तहत अकादमिक महत्त्व पर कार्यशाला

सी.टी.ई. कार्यक्रम के अन्तर्गत मई में 'अकादमिक नेतृत्व' विषयक दो दिवसीय कार्यशाला हुई, जिसमें राज्य की विभिन्न डाइट्स् एवं शिक्षक महाविद्यालयों के प्राचार्यों ने भाग लिया। संदर्भ व्यक्ति प्रो. ए.बी. फाटक, प्रो. एम.पी. शर्मा एवं प्रो. दिव्य प्रभा नागर थीं।

कार्यशाला के पहले दिन 'अध्यापक शिक्षा क्यों और कैसे' विषय पर समूहवार चर्चा एवं प्रस्तुतीकरण हुआ। दूसरे दिन

'शिक्षण क्या, कहां और कैसे' तथा 'आदर्श संस्था प्रधान कैसा हो' विषय पर खुली चर्चा हुई। अच्छे नेतृत्वकर्त्ता के गुणों में समय–समय पर स्व–विश्लेषण की क्षमता को महत्वपूर्ण माना गया।

सी.टी.ई. के ही अंतर्गत महाविद्यालय में हिन्दी अंग्रेजी, गणित एवं सामाजिक विज्ञान विषयों के सेवारत शिक्षकों हेतु विषयवार कार्यशालाओं का आयोजन हुआ, जिसमें राजस्थान के सात जिलों के वरिष्ठ अध्यापकों ने भाग लिया। कार्यशालाओं में बतौर संदर्भ व्यक्ति विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केन्द्र सहित विभिन्न संस्थाओं से विषय–विशेषज्ञों को सम्मिलित किया गया।

सार्वभौमिक हों शोध के निष्कर्ष

महाविद्यालय के यू.जी.सी. सभागार में फैकल्टी डवलपमेंट कमेटी द्वारा जून के अंतिम सप्ताह में 'शोध' विषय पर पांच दिवसीय कार्यशाला हुई, जिसका मुख्य उद्देश्य शोध के संबंध में कार्यकर्ताओं की क्षमता को विकासित करना था। इसमें विद्या भवन शिक्षक महाविद्यालय, विद्या भवन कला संस्थान, विद्या भवन रूरल संस्थान एवं विद्या भवन पॉलिटैक्निक के प्राध्यापकों ने भाग लिया। संदर्भ व्यक्ति प्रो. कमल महेन्द्रु ने शोध क्यों व कैसा हो एवं अच्छे शोध के अर्थ पर प्रतिभागियों से समूह कार्य करवाया। इसमें उभरकर आया कि एक अच्छा शोध वह होता है जो वैज्ञानिक विधि पर आधारित हो व जिसके निष्कर्ष सार्वभौमिक हों। कार्यशाला के प्रारंभिक सत्र में प्रो. अरुण चतुर्वेदी एवं महाविद्यालय की निदेशक प्रो. दिव्यप्रभा नागर ने शोध के उद्देश्य एवं विभिन्न चरण बताए। प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री ने व्याकरण के नियमों पर समूह कार्य करवाया। साथ ही शोध संबंधी समस्याओं एवं रूप–रेखाओं का विवेचन किया।

प्रो. दिव्य प्रभा नागर का पदस्थापन

प्रो. दिव्य प्रभा नागर ने महाविद्यालय के निदेशक एवं प्राचार्य के रूप में पदभार ग्रहण किया है। प्रो. नागर पूर्व में यहीं पर रीडर थीं बाद में वे लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्राचार्य के पद पर तथा जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड विश्वविद्यालय की कुलपति भी रहीं।

महाविद्यालय के आगामी कार्यक्रम

- नवीन सत्र की तैयारी हेतु बैठक।
- पूर्व सत्र की समीक्षात्मक बैठक।
- वार्षिक प्रायोगिक परीक्षा हेतु मार्गदर्शक कक्षाएं।

विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान

www.vbgies.org

खेलोगे, कूदोगे तो बनोगे नवाब

भावी शिक्षकों में खेल स्पर्द्धाओं के नियोजन, क्रियान्वयन व निर्णय संबंधी कौशल के विकास के उद्देश्य से महाविद्यालय में दो दिवसीय खेलकूद एवं एथेलेटिक्स स्पर्द्धाएं हुईं। असित रॉय के निर्देशन में विद्यार्थियों ने 100 व 200 मीटर दौड़, 400 मीटर रिले–दौड़, रस्साकशी, गोला फेंक, तश्तरी फेंक स्पर्द्धाओं के संचालन संबंधी नियमों को जाना। सभी प्रकार की दौड़ों के लिए ग्राउण्ड मार्किंग करना, भिन्न प्रकार के थ्रो में दूरी नाप कर विजेताओं का निर्धारण एवं फाउल तय करने जैसी बारीकियों से परिचित होकर बी.एड. के छात्राध्यापकों ने उत्साह के साथ इन खेलों में भाग लिया। महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि कक्षा में कम बोलने वाले व अन्य गतिविधियों में भाग लेने में संकोच प्रकट करने वाले विद्यार्थियों ने भी इन स्पर्द्धाओं में भाग लेकर विजेताओं में अपनी उपस्थिति दर्ज की।

चिंतन आधारित विज्ञान है चित्रकला

महाविद्यालय के विद्यार्थी भवंरलाल प्रजापति ने सभी विद्यार्थियों को ड्रॉइंग व स्केचिंग का प्रशिक्षण दिया। उन्होंने कार्यशाला में चित्रकारी को चिंतन पर आधारित विज्ञान बताया। चित्र बनाने के दौरान पूरी शीट को हल्के पीले अथवा सफेद रंग से रंगकर फिर चित्र बनाने, रंग संयोजन, शेड्स, दूरी और नजदीकी प्रदर्शित करने हेतु तान का प्रयोग, रंग करते समय पानी को शीट से दूर रखने जैसी बुनियादी बातों से अवगत कराया। कई विद्यार्थियों ने पहली बार बिना किसी अन्य चित्र को देखे, अपनी कल्पना एवं सृजनशीलता के आधार पर चित्र बनाने का सफल प्रयास किया।

पाककला सीखी, खाने की सामग्री को संरक्षित करना भी सीखा

खाद्य प्रसंस्करण विशेषज्ञ डॉ. चन्द्रलेखा भारती एवं सरिता भटनागर ने संकाय सदस्यों व विद्यार्थियों को सेब व पपीते का जैम, आंवला, संतरा व गुलाब का शरबत, गुलकंद, अचार (करेला, गट्टा, आम का पानी वाला एवं मिक्सड) बनाना सिखाया। परस्पर संवाद में विद्यार्थियों ने अचार बनाने में नाप न होने पर गुठली के वजन के बराबर नमक लेने जैसी घरेलू सरल प्रक्रिया, रेगिस्तान में मिर्च अधिक क्यों खाई जाती है, गर्भवती महिला व भूखे व्यक्ति को पपीता क्यों नहीं खाना चाहिए, फ्रिज के अभाव में आसानी से बनाया जाने वाला जनता–शीतक आदि के बारे में जाना। विद्यार्थियों को घरेलू खाद्य संरक्षकों तथा उन वस्तुओं का संरक्षण करने के बारे में बताया जो उनके क्षेत्र विशेष में अधिक मात्रा में उत्पादित होती हैं जो सस्ते दामों पर मिलती है ।

कृषि विज्ञान केन्द्र में खेती व पशुपालन तरक्की को देखा–समझा

महाविद्यालय के अधिकांश विद्यार्थी खेती व पशुपालन की पृष्ठभूमि से आते हैं। शिक्षा को स्थानीय उद्योगों से जोड़कर विषयों को कक्षा में प्रस्तुत करने व विशेषज्ञों के अनुभव जानने के उद्देश्य से विद्यार्थियों को विद्या भवन कृषि विज्ञान केन्द्र की विजिट कराई गई ।

कृषि विशेषज्ञ आनंद सिंह जोधा ने विद्यार्थियों को आंवले के छोटे फल, नींबू में फल नहीं आने, गॉफ्टड आम वेरॉयटी के न चलने, देशी आम, भिंडी, पपीता आदि में काला झुमका रोग होने व पपीते के फल के एक तरफ ही पकने के कारणों का समाधान प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों को छप्पन कद्दू, जुगुनी ककड़ी व उन्नत ला–टॅनल तकनीक द्वारा ठंड से बीज अंकुरण को होने वाले नुकसान से बचाव, मौसम पूर्व फसल के उत्पादन जैसी जानकारियों से अवगत कराया गया।

केन्द्र के प्रफुल्ल भटनागर से विद्यार्थियों ने डेयरी में मशीनीकृत दूध निकालने की प्रणाली तथा गोबर गैस प्लांट की प्रक्रिया को समझा। उन्होंने गाय, बैल, भैंस और बकरी की उन्नत नस्लों की जानकारी व दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए संतुलित पशु–आहार की जानकारी भी ली।

फसल उत्पादक विशेषज्ञ मोतीसिंह राठौड़ ने ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन के बढ़ते उपयोग की वजह से गिद्धों की घटती संख्या का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए रसायनों के बढ़ते प्रयोग के कारण फसलों के साथ ही मनुष्य व पशुओं पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को स्पष्ट किया। श्री राठौड़ ने केविन कार्टर के दुर्भिक्ष पीड़ित बालक के चित्र को प्रस्तुत करते हुए विद्यार्थियों को पानी और भोजन व्यर्थ नहीं कर इन्हें बचाने का आग्रह किया।

केन्द्र के हकीमुद्दीन तथा मृदा विज्ञानी वी. के. सैनी ने उन्नत कृषि उपकरण व मृदा स्वास्थ्य परीक्षण कराया तथा मिट्टी के स्वास्थ्य की नियमित जानकारी के लिए विकसित 'मृदा–कार्ड' की जानकारी दी।

ज्ञान–पूंजी के संवर्धन का आग्रह

महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव का रंगारंग आयोजन 21 मई 2014 को हुआ। विद्यार्थियों ने पारंपरिक तथा पाश्चात्य संस्कृतियों की मिश्रित प्रस्तुतियां दीं। वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि राजस्थान विद्यापीठ के पूर्व कुलपति प्रो. बी.पी. भटनागर ने समन्वित विकास के लिए ज्ञान की पूंजी का संवर्द्धन करने का

आग्रह किया। अतिथियों ने महाविद्यालय की प्रतिभाओं को वर्ष भर संचालित शैक्षिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक व खेल गतिविधियों में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रमाण–पत्र प्रदान किए।

रूचिकर व उपयोगी शिक्षण के लिए बंधेज, माण्डने व कचरे का उपयोग जाना

महाविद्यालय विद्यार्थियों में शिल्प–क्राफ्ट के प्रति रुचि व विद्यार्थियों की क्राफ्ट प्रतिभाओं को अभिव्यक्ति का अवसर देकर उनमें आत्मविश्वास विकसित करने के लिए अप्रैल में कार्य शिक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया। संदर्भ व्यक्ति महाविद्यालय की ही दो छात्राएं थीं। छात्रा दीपिका माली के निर्देशन में महाविद्यालय विद्यार्थियों ने चार समूहों में बंधेज प्रक्रिया द्वारा मेजपोश निर्माण की प्रकिया जैसे मेजपोश का नाप लेना, डिजाइन बनाना, दाल से कपड़ों को गांठ बांधना, डाई निर्माण, कपड़े को उसमें भिगोना, सुखाना तथा गांठ खोलना सीखा ।

एक अन्य छात्रा दीपिका माली ने विद्यार्थियों को विभिन्न त्यौहारों पर मेवाड़ की संस्कृति को परिलक्षित करती स्थानीय कला ''माण्डना निर्माण'' उसमें आमाप, बिंबों का चिंतन, भावनाओं तथा विचारों का अंकन का प्रतिबिम्ब जैसे पहुलओं को छुआ। महाविद्यालय के लिये खरीदे गए ग्रीन बोर्ड के कवर में आए प्लास्टिक से महाविद्यालय छात्राओं ने वॉल हेंगिग बनाने का सुझाव दिया। कार्यशाला के अंतिम दिन विद्यार्थियों ने थर्मोकोल व प्लास्टिक अनुपयोगी वेस्ट से सजावटी बंदनवार व वॉल हेंगिग्स का निर्माण किया।

कार्यशाला में निर्मित सभी शिल्पों को महाविद्यालय वार्षिकोत्सव में मंच सज्जा हेतु उपयोग में लिया गया। स्वयं में आत्मनिर्भरता विकसित करने तथा स्थानीय शिल्पों को सीखकर स्थानीय वातावरण से जुड़े रहने के गांधीजी के विचार का छोटा प्रयोग सराहनीय कदम रहा।

विद्या भवन कला संस्थान (बी.एस.टी.सी.)

सृजनशीलता के लिए चित्रकला

भावी अध्यापकों में सृजनशीलता की भावना जागृत करने के लिए संस्थान में चित्रकला से संबंधित दो दिवसीय कार्यशाला अप्रैल में हुई। पहले दिन छात्राध्यापकों ने कोलाज विधि द्वारा पशु–पक्षियों, फल, सब्जियों तथा गुलदस्ते की आकृतियों से कलात्मक आकृतियां बनाईं। छात्राध्यापकों ने पुराने पत्र–पत्रिकाओं से विभिन्न प्रकार के चित्र काटे एवं ड्राईंग शीट पर चिपकाकर अभिव्यक्ति दी। दूसरे दिन छात्राध्यापकों ने रंगांकन विधि द्वारा पोस्टर, जल–रंग, पेन्सिल–रंगों से सुन्दर आकर्षक चित्रों का सृजन किया।

कम्प्यूटर बेसिक कोर्स का प्रशिक्षण

शैक्षिक नवाचार के तहत अप्रैल में छात्राध्यापकों को कम्प्यूटर बेसिक कोर्स का प्रशिक्षण दिया गया। चार दिवसीय प्रशिक्षण में कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर, माइक्रोसॉफ्ट विन्डोज़, वर्ड, एक्सल, पावर–पॉइन्ट, इन्टरनेट, वायरस से सुरक्षा तथा कम्प्यूटर के रख–रखाव संबंधी जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में 33 छात्राध्यापकों ने भाग लिया।

'चन्दा के जूते' फिल्म का प्रदर्शन

संस्थान में लघु फिल्म 'चन्दा के जूते' प्रदर्शित की गई। इस फिल्म में कई मुद्दे अंतर्निहित थे, जैसे शिक्षा का उद्देश्य और आज की दिशा, बच्चों को पुनर्बलन देने का अभाव एवं कक्षा में डर व दुबके रहना, बच्चों के मनोविज्ञान एवं रुचि को नजरअन्दाज करना, बच्चों के परिवेश पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता जैसे कि कच्ची बस्ती, गरीब, कमजोर परिवार के बच्चों में हीन–भावना नहीं आए आदि। छात्राध्यापकों ने इन मुद्दों पर चर्चा की। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. मोहनलाल जाट ने किया।

अब पुस्तकालय का पीरियड अनिवार्य

विद्यार्थियों में नियमित समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें पढ़ने की आदत का विकास हो सके, इस उद्देश्य को ध्यान में रख कर संस्थान में प्रतिदिन पुस्तकालय का एक पीरियड अनिवार्य किया गया है। जून से शुरू की गई इस गतिविधि से छात्राध्यापकों को वार्षिक पाठ–योजना निर्माण में भी सहयोग मिल रहा है। वे सजगता व समय का सदुपयोग करना सीख रहे हैं। सभी स्टाफ सदस्यों के लिए भी पुस्तकालय का पीरियड अनिवार्य किया गया है।

अंग्रेजी की सपोर्ट–कक्षाएं

अंग्रेजी विषय को रुचिकर बनाने और छात्राध्यापकों को विषय से संबंधित कठिनाइयों के निवारण के लिये संस्था में सपोर्ट–कक्षाएं हुईं। इन कक्षाओं के माध्यम से विद्यार्थियों की अंग्रेजी बोलने की झिझक मिटाने, शब्दावली को सुदृढ़ बनाने तथा अपने विचारों को दूसरों के सामने लिखकर तथा बोलकर व्यक्त करवाने का अभ्यास करवाया गया। जुलाई से गणित विषय के लिए भी सपोर्ट–कक्षाएं शुरू की जाएगी।

प्रतियोगिताओं से मिले व्यक्तिव विकास के अवसर

शनिवारीय कार्यक्रम की कड़ी में प्रथम शनिवार को रंगोली प्रतियोगिता हुई। इसके लिए छात्राध्यापकों के 14 समूह बनाए गए। प्रथम स्थान पर द्वितीय वर्ष के स्नेहिल हठीला का समूह एवं द्वितीय स्थान पर द्वितीय वर्ष के दिनेश सिंह का समूह रहा। इसी प्रकार, छात्राध्यापिकाओं के समूह में प्रथम कविता खटीक (प्रथम वर्ष) का समूह एवं द्वितीय स्थान पर टीना गोजा, मंजू सुथार एवं संजू मीणा का समूह रहा है।

दूसरे शनिवार को दोनों बैच के सभी विद्यार्थियों को मूकाभिनय में भाग लेना अनिवार्य रखा गया। छात्राध्यापकों को आठ समूहों में बांट कर प्रत्येक समूह को एक संदेशप्रद विषय पर अशाब्दिक प्रस्तुति देनी थी। प्रथम स्थान पर पूजा खटीक का समूह रहा।

तृतीय शनिवार को मेहन्दी प्रतियोगिता में छात्राओं के साथ छात्रों ने भी भाग लिया तथा टैटू के रूप में हथेली के साथ बाजुओं पर भी आकर्षक डिजाईन बनाई।

'शिक्षा में रंगमंच' की कक्षाएं प्रारंभ

द्वितीय वर्ष के छात्राध्यापकों के लिए 'शिक्षा में रंगमंच' के महत्त्व को समझने के उद्देश्य से प्रत्येक गुरुवार को तीन घंटे की कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इसमें सभी छात्राध्यापक कक्षा–कक्ष के भीतर व बाहर अभिनय व खेल द्वारा जहां अपने व्यक्तित्व में निखार लाने का अनुभव प्राप्त कर रहे हैं वहीं शिक्षण को रुचिकर बनाना भी सीख रहे हैं। रंगमंच की कक्षाएं तीन माह तक चलेंगी। इन कक्षाओं में उभरे कलाकारों को नुक्कड़ नाटक द्वारा जन–समुदाय में जागरूकता लाने के लिए जोड़ा जाएगा।

कार्य–योजना निर्माण, क्षमतावर्द्धन व खेल में कार्यकर्ताओं की सक्रियता

बी.एस.टी.सी. के नवीन पाठ्यक्रम के संदर्भ में संस्थान के कार्यकर्ताओं ने कार्य–योजना बनाई। संस्थान स्तर पर बैठकों के आयोजन के पश्चात् आगामी वर्ष की गतिविधियों का कैलेण्डर बनाया गया। सभी गतिविधि–प्रभारियों ने अपने विषय से संबधित कार्यशालाओं की योजना भी तय की।

सोसायटी स्तर पर आयोजित क्षमता संवर्द्धन कार्यशाला में शोध से संबंधित विभिन्न पक्षों पर समझ बनाई। पाठ्यक्रम क्रियान्विति के विभिन्न पक्षों के शोध संबंधी क्षेत्रों का चयन कर उन्हें आगामी वर्ष में पूरा करना प्रस्तावित है। सोसायटी के खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में ईशा शर्मा ने 100 मीटर दौड़ में तथा ललिता शर्मा ने कैरम में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। रस्साकशी में दुर्गा कुमावत का समूह प्रथम रहा। ईशा शर्मा ने नृत्य की प्रस्तुति दी।

विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केन्द्र

www.vberc.org

विद्या भवन में क्षमतावर्द्धन, सी.टी.ई. परियोजना में भागीदारी

सोसायटी की फैकल्टी डवलपमेंट कमेटी की ओर से विद्या भवन के स्कूल व कॉलेजों के कार्यकर्ताओं के क्षमतावर्द्धन के लिए मॉड्यूल–निर्माण एवं प्रशिक्षण में केन्द्र के कार्यकर्ता शामिल हुए।

इसी प्रकार, विद्या भवन गो.से. शिक्षक महाविद्यालय में सी.टी.ई. परियोजना के अंतर्गत सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में विज्ञान विषय पर केन्द्र से संदर्भ व्यक्ति के रूप में सेवाएं दी गईं। 'एन.सी.एफ. में विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य' तथा 'सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन' पर समझ बनाने का प्रयास किया गया।

शिक्षण शास्त्र, मूल्यांकन पर प्रशिक्षण

केन्द्र ने जून में नालन्दा (लखनऊ में शिक्षा पर काम करने वाली संस्था) के 9 सदस्यों की क्षमता संवर्द्धन के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया। प्रशिक्षण में केन्द्र के 7 नवनियुक्त सदस्यों को भी शामिल किया गया। प्रशिक्षण शिक्षा, शिक्षण शास्त्र, मूल्यांकन एवं नवाचारों पर आधारित था।

'हुनरघर' के शिक्षकों के साथ फॉलोअप

केन्द्र कोटड़ा के रिमोट क्षेत्र में स्थित प्रयोगधर्मी स्कूल 'हुनरघर' के अध्यापकों की क्षमता संवर्धन कार्यक्रम से काफी समय से जुड़ा है। गत तिमाही में हुनरघर के 10 शिक्षकों के लिए आयोजित दो दिवसीय फॉलोअप प्रशिक्षण में शिक्षण विधि एवं योजना पर बात की गई।

आंध्रप्रदेश के शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण

आंध्रप्रदेश आवासीय विद्यालय के शिक्षकों के लिए गणित एवं विज्ञान आधारित प्रशिक्षण केन्द्र पर अप्रैल में आयोजित हुआ। भौतिक विज्ञान के 11, जीव विज्ञान के 14 और गणित के 22 शिक्षक शामिल हुए। प्रशिक्षण में शिक्षकों की विषय शिक्षण प्रक्रिया में सुधार लाने के साथ ही अपने अनुभवों को साझा करने का मंच भी प्रदान किया गया।

केन्द्र एस.सी.ई.आर.टी., आंध्रप्रदेश के साथ मिलकर डी.एड. के लिए पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर चुका है। इसी पाठ्यक्रम के लिए 13 विषयों से संबंधित विषयवस्तु के निर्माण का कार्य जारी है।

कक्षा में जुड़ाव के तरीके सुझाए

केन्द्र की हजीरा शाखा ने एस.एस.ए. द्वारा आयोजित ग्रीष्मावकाश सरकारी शिक्षकों के प्रशिक्षण में भागीदारी निभाई। प्रशिक्षणों में ऐसी सामग्री उपलब्ध करवाई गई जो शिक्षकों को विषय की प्रकृति, उद्देश्य एवं शिक्षण विधा को समझने में मदद करे। बच्चों के साथ कक्षा में बेहतर जुड़ाव के तरीके भी सुझाए गए।

बिहार में दूरस्थ शिक्षा के लिए पठन सामग्री निर्माण व प्रशिक्षण

शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत सभी अप्रशिक्षित सेवारत शिक्षकों को प्रशिक्षित करना अनिवार्य है। इसी क्रम में बिहार राज्य ने दूरस्थ शिक्षा की पठन सामग्री का निर्माण किया। ओ.डी.एल. प्रथम वर्ष के लिए उदयपुर व पटना की संयुक्त टीम ने एस.सी.ई.आर.टी. व डायट के शिक्षकों के साथ मिल कर सामग्री निर्माण किया। इस पठन सामग्री पर राज्य के साधन–सेवियों के लिए पहले सत्र का प्रशिक्षण विभिन्न चरणों में सम्पन्न हुआ। द्वितीय वर्ष की पठन सामग्री का निर्माण भी किया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ की पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा

केन्द्र छत्तीसगढ़ राज्य में पिछले 10 वर्षों से शैक्षिक गुणवत्ता के लिए काम कर रहा है। इसी क्रम में गत तिमाही में प्रारम्भिक कक्षाओं की भाषा, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन की पुस्तकों की समीक्षा की गई। इस तरह की समीक्षाएं पाठ्यपुस्तकों को शिक्षा में आए नवाचारों के सापेक्ष देखने एवं उन पर अपनी समझ बनाने के मौके उपलब्ध करवाती हैं।

शोध उपकरणों का विश्लेषण

विप्रो द्वारा समर्थित 'वॉटिस परियोजना' के तहत शिक्षकों की भाषा एवं गणितीय समझ को जानने के लिए शोध के तहत जिन उपकरणों की पॉयलेटिंग की गई, उनके विश्लेषण का कार्य सम्पन्न हुआ। जून में उसकी रिपोर्ट पर काम किया गया और प्रतिक्रियाओं के आधार पर छूटे हुए मुद्दों पर बात करने के लिए साक्षात्कार प्रपत्र का निर्माण किया। साथ ही कक्षा–5 के लिए ई.वी.एस. के कार्य–पत्रकों की समीक्षात्मक रिपोर्ट पर काम किया जा रहा है।

आंगनवाड़ी केन्द्रों के लिए लघु–शोध

केन्द्र यूनिसेफ के साथ मिलकर उदयपुर एवं डूंगरपुर जिलों के आंगनवाड़ी केन्द्रों की वर्तमान स्थिति जानने के लिए एक लघु–शोध कर रहा है। इस प्रक्रिया में टीम का फोकस यह समझना है कि आंगनवाड़ी केन्द्रों की कार्य–प्रणाली क्या है और ये केन्द्र बच्चों को शाला–पूर्व शिक्षा व अन्य माध्यमों से स्कूल जाने के लिए तैयार करने में किस तरह की भूमिका का निर्वाह करते हैं। इस शोध के अन्तर्गत दोनों जिलों के चार ब्लॉकों (आसपुर, बिच्छीवाड़ा, झाड़ोल और गिर्वा) के लगभग 100 केन्द्रों को शामिल किया। केन्द्रों से लिए गए आंकड़ों के विश्लेषण एवं रिपोर्ट लेखन का काम जारी है।

हजीरा के छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण

हजीरा (गुजरात) और विस्तारित क्षेत्र में बढ़ती बेरोजगारी और कुशल श्रमिकों की कमी के मद्देनजर केन्द्र एच.एल.पी.एल. के साथ मिलकर एक व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रहा है। इसके तहत केन्द्र ने विद्या भवन पॉलिटेक्निक के माध्यम से जून में 27 जरूरतमंद छात्रों को इलेक्ट्रिकल के क्षेत्र में प्रशिक्षण दिलवाया ताकि वे अपनी आजीविका चला सकें। 18 से 25 वर्ष की आयु के इन छात्रों को गणित, अंग्रेजी और कम्प्यूटर का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

उदयपुर, बिहार और हजीरा के स्कूलों के साथ काम

केन्द्र प्रशिक्षण एवं सामग्री निर्माण के साथ ही स्कूलों की अन्य गतिविधियों के साथ भी जुड़ा रहा है। विद्या भवन के स्कूलों से केन्द्र के 4 सदस्य शिक्षक के रूप में जुड़े हैं। ये साथी स्कूल में लेखाशास्त्र, व्यावसायिक प्रबन्धन, विज्ञान, भाषा, गणित एवं पुस्तकालय शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं। कक्षा में विभिन्न गतिविधियां करवाने के साथ ही हर बच्चे को उसके सीखने के स्तर के अनुरूप माहौल देने का प्रयास करते हैं।

बिहार केन्द्र द्वारा चयनित तीन जिलों के 30 स्कूलों में बच्चों को भाषा सीखने के और मौके उपलब्ध करवाने हेतु वर्कशीट व पुस्तकालय के लिए वर्ग अनुरूप

पुस्तकें एवं शिक्षकों के क्षमता संवर्धन हेतु पठन सामग्री उपलब्ध करवाई गई।

हजीरा केन्द्र की ओर से 11 गतिविधि केन्द्रों पर बच्चों को भाषा सीखने के लिए सामग्री उपलब्ध करवाई गई। इसके साथ ही स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर बच्चों को वास्तविक स्थितियों में सामाजिक कौशल अर्जित करने, आत्मविश्वास पैदा करने तथा खुद से सीखने का माहौल देने के लिए मैट्रीक मैजरमेंट, पठन कक्षाओं, बाल मेला, सिलाई, सुथारी, बिजली, संगीत, मेंहदी, नृत्य और खाद्य प्रसंस्करण के साथ ही विविध अभिरुचि कक्षाओं का आयोजन किया गया।

मतदाता जागरूकता के लिए रैली, मानव-शृंखला

लोकतन्त्र और जिम्मेदार नागरिकता का विचार विद्या भवन की स्थापना के मूल उद्देश्यों में शामिल है। इसी भावना के अनुरूप, लोकसभा चुनाव–2014 के मद्देनजर, मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत विद्या भवन सोसायटी की विभिन्न संस्थाओं ने पोस्टर–बैनर बनाए व रैलियां निकालीं। इसके साथ ही सभी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने सम्मिलित रूप से 13 व 14 अप्रैल को रैली निकालकर और मानव शृंखला बनाकर अधिकाधिक मतदान का संदेश दिया।

शैक्षणिक संवाद की पत्रिकाएं

विद्या भवन सोसायटी एवं अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में त्रैमासिक पत्रिकाओं "शिक्षा की बुनियाद" के अंक–8 और "खोजें और जाने" के अंक–9 का प्रकाशन हुआ।

"शिक्षा की बुनियाद" के नवीन अंक में के.आर. शर्मा का लेख 'स्कूल को सक्षम बनाने के मायने' स्कूल के सशक्तीकरण के मुद्दे को उठाते हुए स्कूल की जरूरतों व सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को सार्थक बनाने पर प्रकाश डालता है। रेखा चमोली ने कक्षा 4 व 5 के बच्चों के उत्तराखंड बाढ़ (15 व 16 जून, 2013) के अनुभवों को प्रस्तुत करते हुए बताया है कि इस बाढ़ से जो मानवीय और प्राकृतिक नुकसान हुआ है उसका बच्चों के दिल–ओ–दिमाग पर क्या असर पड़ा है। यशवेंद्र सिंह रावत का लेख 'आधे पर बातचीत' गणित विषय को सीखने के संदर्भ में है जो बुनियादी शिक्षा की मूल अवधारणा से जुड़ा है कि बच्चे मूर्त चीजों के साथ काम करके बहुत कुछ सीख सकते हैं और वे जो कुछ भी सीखेंगे, वह स्थाई व उपयोगी होगा। भावना भट्ट का लेख 'देखो मगर ध्यान से' नासिक (महाराष्ट्र) के एक स्कूल (आनंद निकेतन) की आनंददायी शिक्षा की छवि को प्रस्तुत करता है। गिरीश शर्मा का लेख 'कितना पढ़ा है मैकॉले को...?' थॉमस बैबिंगटन मैकॉले के विचार के दूसरे पक्ष को पाठकों के सामने रखता है। गांधीजी ने अपने जीवन में विविध भूमिकाओं में काम किया था। लेखक अनु बंधोपाध्याय ने अपने लेख 'गांधी एक शिक्षक' में गांधी के शिक्षक रूप को प्रकट किया है।

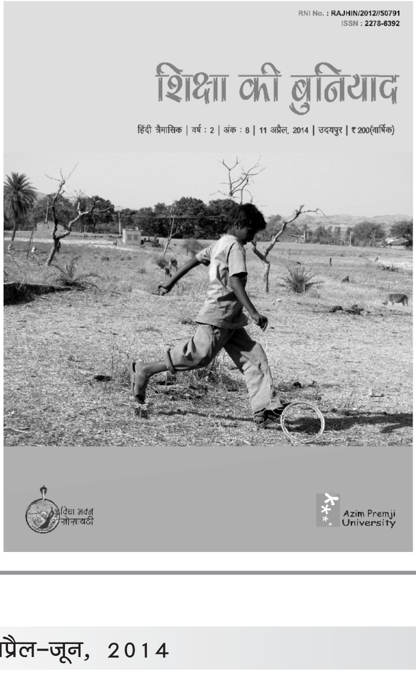

वहीं "खोजें और जानें" के नए अंक को 'हमारे मन में शिक्षक की अवधारणा' पर केन्द्रित करने की कोशिश की गई है। अध्यापक को लेकर जो अवधारणाएं हैं उनमें से कुछ तो लगातार बदलती रहती हैं और कुछ शाश्वत हैं। प्रो. कमल महेन्द्रू का लेख 'अच्छे शिक्षक के मायने' जहां शिक्षा और स्कूल से जुड़े सवालों जैसे– अच्छा स्कूल क्या है, अच्छी पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षण विधि क्या है एवं अच्छा शिक्षक क्या है आदि पर विमर्श प्रस्तुत करता है; वहीं चंदन श्रीवास्तव के लेख में अध्यापक की अस्मिता को शिक्षा व्यवस्था, समाज व शिक्षा नीतियों के प्रकाश में आरेखित किया गया है। यहां उन्होंने चिंता जाहिर की है कि शिक्षा के दस्तावेजों में भी अध्यापक की निर्मिति का बहुत ही संकुचित स्वरूप परिभाषित किया गया है। अध्यापक को मात्र सहायक के रूप में ना देखकर उसे एक सक्रिय चिंतक व मननकर्ता के रूप में देखा जाना चाहिए। साथ ही इस अंक में गिजु भाई जैसे शिक्षकों के अनुभवों को भी सम्मिलित किया गया है। शिक्षकों के स्वयं के अनुभव, चुनौतियां, अच्छे शिक्षण आदि के बारे में विचारों के साथ–साथ शिक्षक व उनसे संवाद करते अन्य लोगों के अनुभव इस अंक में पढ़ेंगे।

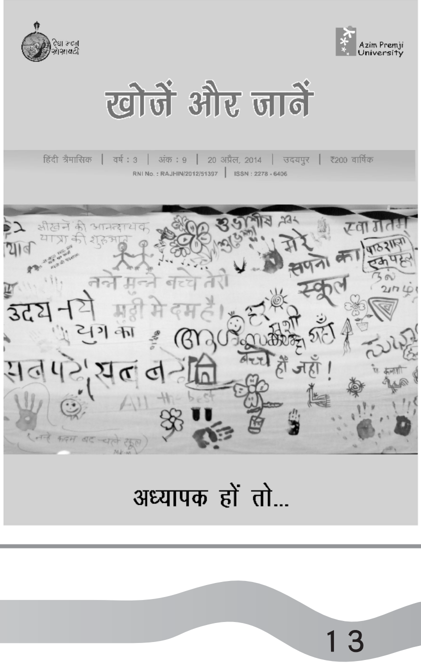

विद्या भवन स्थानीय स्वशासन एवं उत्तरदायी नागरिकता संस्थान

www.vbilsgrc.org

वार्ड सभा से बढ़ी समुदाय की भागीदारी

ग्राम पंचायत के फैसलों में गांव–फले तक की भागीदारी तय करने के लिए राजस्थान में पंचायती राज के तहत वर्ष 2000 में वार्ड सभा को शामिल किया गया। किन्तु सरकार के आदेश पर होने वाली बैठकों के अलावा वार्ड सभाएं लगभग निष्क्रिय रही हैं। संस्थान ने सघन कार्यक्रम के लिए चयनित 24 ग्राम पंचायतों में वार्ड सभा को सक्रिय करने का बीड़ा उठाया। अगस्त 2011 से यह सिलसिला शुरू हुआ और अब तक 111 वार्ड सभाओं की बैठकें हो चुकी हैं। इसके तहत गांव में रहकर ग्राम पंचायत को सहयोग देने वाले पंचायत मित्रों व क्षेत्रीय समन्वयकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

ख़ास बात यह है कि जहां पूरी ग्राम पंचायत की ग्राम सभा की बैठक में वास्तविक औसत उपस्थिति 10 प्रतिशत से भी कम है, वहीं इन वार्ड सभा की बैठकों में औसत उपस्थिति 18 प्रतिशत है और इनमें भी महिलाओं की औसत उपस्थिति 52 प्रतिशत है। वार्ड सभाओं में औसतन 10–12 प्रस्ताव आते हैं। संस्थान द्वारा असली विकास के बारे में जागरूकता के फलस्वरूप भौतिक विकास के साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छ पेयजल आदि मानव–विकास से सम्बन्धित प्रस्ताव पारित होना व उनपर अमल होना इन वार्ड सभाओं की विशेषता है। उदाहरण के लिए कुछ प्रस्ताव– व्यर्थ पानी बहाने पर रु.500 जुर्माना लगाना, छात्राओं के आवश्यक प्रमाण–पत्र बनवाकर बैंक में खाता खुलवाने और टैबलेट पी.सी. दिलवाना, अतिक्रमण हटाना, सड़क व हैण्डपम्प का स्थान तय करना आदि थे।

इस प्रकार, संस्थान के प्रशिक्षण और सघन कार्यक्रम के कारण वार्ड सभाएं तृणमूल स्तर पर जनभागीदारी का माध्यम बनती जा रही हैं। अप्रैल से जून 2014 के मध्य सघन क्षेत्र की पंचायतों में 7 वार्ड सभाएं हुईं।

संस्थान की चयनित पंचायतों ने किया बेहतर काम

संस्थान द्वारा चयनित 24 ग्राम पंचायतों में ज़िले की अन्य ग्राम पंचायतों की तुलना में बेहतर काम हुआ है। बड़गांव व गोगुन्दा पंचायत समितियों की इन 12–12 ग्राम पंचायतों ने पंचायती राज के जनप्रतिनिधियों की सक्रियता, ग्राम स्तरीय संस्थाओं का अवलोकन, वार्ड सभा, ग्राम सभा, पंचायत बैठक, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास के क्षेत्र में संतोषजनक काम किया है, यद्यपि अभी सुधार की बहुत गुंजाइश है।

पंचायती राज चुनाव–2010 के बाद से संस्थान द्वारा किए गए काम का मूल्यांकन जनवरी से मई 2014 के बीच किया गया। सरपंच, वार्डपंच तथा महिला एवं पुरुष समूहों की साक्षात्कार अनुसूचियों के ज़रिए मूल्यांकन किया गया, जिसमें 36 ग्राम पंचायतों के 1003 व्यक्तियों से व्यक्तिगत व समूह में जानकारी प्राप्त की गई। इनमें सघन क्षेत्र की सभी 24 ग्राम पंचायतों के अलावा ऐसी 6–6 ग्राम पंचायतों को चुना गया जहां से क्रमशः अधिकतर पंच प्रशिक्षण में आए एवं किसी भी पंच ने प्रशिक्षण में भाग नहीं लिया था। प्रशिक्षित पंचायतों ने भी अप्रशिक्षित पंचायतों की तुलना में बेहतर काम किया है, किन्तु वहां सामुदायिक भागीदारी के मंचों जैसे कि वार्ड सभा व ग्राम सभा की बैठकों की सक्रियता सघन क्षेत्र की तुलना में बहुत कम रही है।

उल्लेखनीय है कि चयनित ग्राम पंचायतों में आम–जन ने भी बेहतर काम होने की तस्दीक की है। हालांकि वित्तीय पारदर्शिता में सभी क्षेत्रों में बहुत अधिक प्रयासों की आवश्यकता है।

जनजातियों में सामाजिक–आर्थिक बदलावों से महिलाओं पर दबाव बढ़ा

पंचायती राज सशक्तीकरण पर दो दिवसीय ज़िला स्तरीय कार्यशाला के समापन सत्र में उदयपुर के सम्भागीय आयुक्त वैभव गालरिया तथा गिर्वा पंचायत समिति की प्रधान सुखबीर कौर कटारा ने यह विचार व्यक्त किए कि सामाजिक–आर्थिक बदलावों के कारण जनजातियों के रहन–सहन में जो परिवर्तन हो रहे हैं, उनका असर महिलाओं पर भी पड़ रहा है। जनजातियों में पारम्परिक रूप से महिलाएं अधिक स्वतंत्र रही हैं, किन्तु शहरीकरण और सामान्य वर्ग के निकट संपर्क के कारण पर्दा–प्रथा, सबके बाद में खाना खाना से कुपोषण आदि में बढ़ोतरी हुई है।

संस्थान ने अपने पिछले 5 वर्षों के काम का मूल्यांकन प्रस्तुत करने तथा तृणमूल स्तर पर लोकतन्त्र एवं मानव विकास में पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका पर विचार–विमर्श के लिए 30–31 मई 2014 को विद्या भवन गो.से. शिक्षक महाविद्यालय में कार्यशाला का आयोजन किया। पंचायती राज के तीनों स्तरों के जनप्रतिनिधि, अधिकारी, स्वयंसेवी संस्थाओं के सदस्य एवं विषय विशेषज्ञ सहित 65 संभागी थे। उद्घाटन ज़िला प्रमुख मधु मेहता एवं ज़िला उप–प्रमुख श्यामलाल चौधरी ने किया।

तीन समूह चर्चाओं में ग्राम पंचायत स्तरीय स्थाई समितियों की सक्रियता, बालिका शिक्षा में ग्राम पंचायत एवं समुदाय की भूमिका तथा महिलाओं के प्रति नज़रिए में बदलाव लाने व हिंसा रोकने में पंचायत व समुदाय की भूमिका पर कार्य बिन्दु तैयार किए गए।

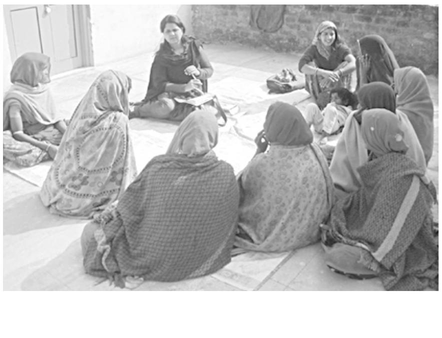

भौतिक और मानवीय पक्षों को समझने में उपयोगी है 'पी.आर.ए.'

सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (पी.आर.ए.) की तकनीकों के ज़रिए किसी भी क्षेत्र की भौतिक एवं मानवीय स्थितियों को वैज्ञानिक रीति से जाना जा सकता है तथा मानचित्रण एवं संकलन किया जा सकता है। विकासात्मक कार्यों में संलग्न विद्या भवन सोसायटी की संस्थाओं के कार्यकर्ताओं का क्षमतावर्द्धन कार्यक्रम 25 से 27 जून 2014 को बड़गांव स्थित विद्या भवन कृषि विज्ञान केन्द्र में हुआ, जिसमें पी.आर.ए. की सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक जानकारी दी गई।

विद्या भवन स्थानीय स्वशासन एवं उत्तरदायी नागरिकता संस्थान, विद्या भवन आंगनवाड़ी प्रशिक्षण केन्द्र, वी.बी.के.वी.के., वी.बी. पॉलिटैक्निक से सी.डी.टी.पी. के 19 कार्यकर्ताओं ने कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला में पी.आर.ए. का अर्थ, उद्देश्य, आवश्यकता, कार्य के दौरान सावधानियां, पी.आर.ए. के प्रकार जैसे कि नज़री नक्शा, ट्रान्ज़िट वॉक, टाइम लाईन, चपाती डायग्राम, मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों का मानचित्रण, तृणमूल स्तर से विकास योजनाओं का निर्माण, क्रियान्वयन और उसमें जन–सहभागिता, टिकाऊ विकास की अवधारणा, प्राथमिकता निर्धारण एवं सहभागी निर्णय की प्रक्रिया आदि पक्षों की जानकारी दी गई।

सन्दर्भ व्यक्ति महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सी.टी.ए.ई. के प्रो.एच.के. मित्तल, कृषि विस्तार केन्द्र के प्रो.एस.एस. राजपूत एवं गृह विज्ञान महाविद्यालय की व्याख्याता घृति सोलंकी थे।

विद्या भवन कृषि विज्ञान केन्द्र

www.vbkvk.org

प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण

केन्द्र की ओर से किसानों, किसान महिलाओं, ग्रामीण युवा, विद्यालय से वंचित बालकों और प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित किए गए। कुल 33 प्रशिक्षणों में केन्द्र पर तीन दिवसीय 3 प्रशिक्षण, केन्द्र से बाहर एक दिवसीय 26 प्रशिक्षण, 2 प्रसार प्रशिक्षण तथा 2 प्रायोजित प्रशिक्षण आयोजित किए गए। इन प्रशिक्षणों में 1375 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

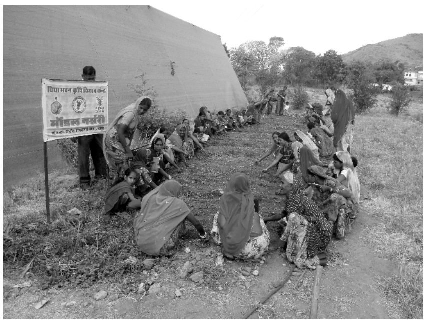

किसानों को खेत पर मिली जानकारी

किसानों के खेतों पर 'ऑन फार्म' गतिविधियां करवाई गईं। कृषि वैज्ञानिकों के सान्निध्य में आयोजित इन गतिविधियों में कृषकों को नवीनतम जानकारियां खेतों पर दी गईं। इससे जोधपुरिया और भीलों की भागल के 20 किसान लाभान्वित हुए।

फसलों का प्रदर्शन

नवीन फसलों के प्रकार और प्रैक्टिस–क्रॉप के वैज्ञानिक पैकेज के साथ फसलों का प्रदर्शन किया गया। समर मूंग, तिल, ब्लैक ग्राम, सोयाबीन और क्लस्टर बीन फसलों के प्रदर्शन में 325 किसानों ने भाग लिया। ये किसान सगतपुरा, जामूड़ा घाटा, सगड़िया, राठौड़ा, निमाड़ी, चरगड़िया, धावड़िया, रानिया, नागालिया, गोपालपुरा, पाल कुरड़िया, जगतपुरिया, करनपुरिया, शिपुर, भीलों की भागल, अरनिया के थे।

नवीन तकनीक से रू–ब–रू हुए ग्रामीण

केन्द्र द्वारा किसानों को नवीनतम तकनीक से रू–ब–रू कराने के उद्देश्य से कई कार्यक्रम हुए। ब्रीडिंग बक के 7 तथा न्यूट्री–गार्डन के 35 प्रदर्शन गोपालपुरा गांव में आयोजित किए गए।

संपोषित कृषि के लिए प्रसार

केन्द्र की ओर से विभिन्न प्रसार गतिविधियों का आयोजन हुआ। गतिविधियों के आयोजन का उद्देश्य किसानों को संपोषित कृषि के लिए प्रोत्साहन देना था। इसमें फिल्ड–डे, प्रदर्शनी, फिल्म शो, किसान गोष्ठी, रात्रि कैम्प आदि आयोजित किए गए। विभिन्न गतिविधियों में करीब 8 हजार प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

बकरियों की नस्ल सुधार के लिए गुलाबपुरा क्षेत्र में 5 सिरोही नस्ल की बकरियां वितरित की गईं। उदयपुर जिले में मानसून में देरी के कारण सूखे से निपटने की योजना बनाई गई। इस योजना को जमीनी स्तर पर किसान समुदाय के लिए लागू किया गया।

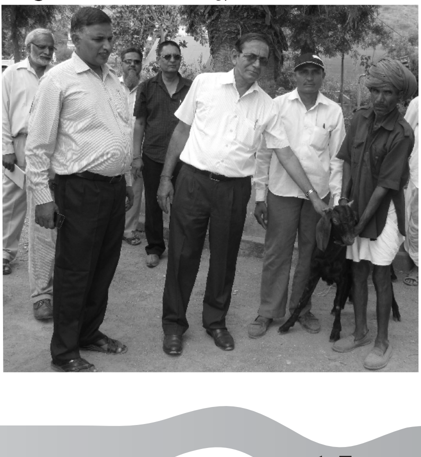

विद्या भवन अकादमिक सलाहकार समिति

कार्यकर्ताओं में स्व–प्रेरणा और नेतृत्व विकास के प्रयास

विद्या भवन के कार्यकर्ताओं और संस्था प्रधानों में स्व–प्रेरणा से काम करने और नेतृत्व की क्षमता के विकास के लिए अकादमिक सलाहकार समिति ने प्रयास शुरू किया है। इस सन्दर्भ में समिति की 32वीं एवं 33वीं बैठकें क्रमशः 17 मई व 30 मई 2014 को विद्या भवन शिक्षा सन्दर्भ केन्द्र में हुईं, जिनकी अध्यक्षता शैक्षिक सलाहकार डॉ. एच.के. दीवान ने की। समिति के सदस्यों को, इसी विषय पर, 5 मई 2014 को संस्था प्रधानों की बैठक के बिन्दुओं से अवगत कराया गया। समिति की 17 मई की बैठक में जो प्रमुख विचार सामने आए उनमें विद्या भवन की छवि, संस्था एवं कार्यकर्ताओं के समक्ष चुनौतियां, संस्था प्रधान के लिए गर्व करने व छोड़ने लायक बातें और संस्था प्रधानों के लिए रेटिंग स्केल बनाना प्रमुख थे।

चार समूहों में चर्चा हुई। इनमें प्रस्तुत विचारों में ऐसी ग़लतियां जो नहीं करनी चाहिए थीं, गर्व करने योग्य कार्य, विद्या भवन के साझेदारों के लिए संतोष तथा असंतोष की बातें शामिल थीं। अधिकारी को क्या करना व क्या नहीं करना चाहिए पर जो विचार सामने आए उनमें शीघ्र निर्णय, स्पष्ट व भागीदारीपूर्ण प्रक्रिया, संस्था में सुधार को प्रवृत्त करना, कार्यों का अनुगमन, छुट्टी आदि विषयों पर अधिकार का दुरुपयोग नहीं करना, सकारात्मक, स्वच्छ छवि व उद्देश्यपरक होना तथा दूसरों की गलती पर जवाब से पूर्व अपनी गलती को स्वीकारना प्रमुख थे।

30 मई की बैठक में संस्था प्रधानों ने कार्यकारिणी सदस्य के दृष्टिकोण से विद्या भवन की संस्थाओं से अपेक्षा पर विचार रखे। इनमें विद्या भवन को उद्देश्यों के अनुरूप देश की सर्वश्रेष्ठ संस्था बनाना, समाज में सम्मान, अच्छे शैक्षिक परिणाम, संस्थाओं की आत्मनिर्भरता, संसाधनों का पूर्ण उपयोग, संस्था प्रांगण का रख–रखाव एवं स्वच्छता, बैठक के मिनिट्स् समय पर मिलना, विद्यार्थियों व अभिभावकों से सद्व्यवहार तथा संस्था प्रधानों के पास तात्कालिक व दूरगामी योजना होना एवं सभी जानकारियां उपलब्ध व स्मरण होना प्रमुख विचार थे। संस्था प्रधानों के पास अपनी कार्य–प्रगति के स्वमूल्यांकन हेतु व्यक्तिगत व गोपनीय रिपोर्ट हो, इसके लिए मुख्य बिन्दु डॉ. सुगन शर्मा व प्रसून कुमार तैयार करेंगे।

विद्या भवन अकाउण्ट्स एण्ड फाईनेन्स

एम.कॉम. उत्तीर्ण छात्रों का प्रशिक्षण

विद्या भवन सोसायटी के अध्यक्ष द्वारा स्वीकृत योजना के अनुसार विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट से वर्ष 2013–14 में उत्तीर्ण एम.कॉम. छात्रों को चार महीने के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए पत्र जारी कर दिये गए हैं। प्रशिक्षण अवधि 19 अगस्त, 2014 से प्रारम्भ होगी। जिन छात्रों को पत्र जारी हुए हैं उनमें– विनीता जोशी, रोहित पूर्बिया, दीपिका कुमावत एवं ललित चौबीसा शामिल हैं।

पदोन्नतियां व नियुक्तियां

अकाउण्ट्स विभाग के दो सह–लेखाकारों फातिमा काग़ज़ी एवं आशीष सेन को लेखाकार के पद पर प्रोन्नत किया गया। फातिमा की नियुक्ति विद्या भवन गो.से. शिक्षक महाविद्यालय में तथा आशीष को विद्या भवन सोसायटी में नियुक्त किया गया। लेखाकार आशा जैन को विद्या भवन कृषि विज्ञान केन्द्र एवं सह–लेखाकार के पद पर विष्णु नायर को विद्या भवन बेसिक स्कूल में नियुक्त किया गया।

अनुभव

बढ़ा अनुसंधान की समझ का दायरा

विद्या भवन सोसायटी की ओर से अनुसंधान कार्यशाला की शुरुआत कुछ बुनियादी प्रश्नों से हुई जैसे शोध क्या है? अच्छा शोध किसे कहेंगे? शोध कैसे किया जाना चाहिए? इन प्रश्नों को देखने से लग रहा था कि ये बहुत ही आसान हैं। लेकिन जब इन पर सोचना शुरू किया तो ये इतने आसान भी नहीं थे। इन प्रश्नों के आधार पर समूह बनाए गए, जिनमें तर्क–वितर्क हुआ। लंबी बहस चलने के बाद भी कुछ बिन्दुओं पर ही हमारी सहमति बन पाई। प्रत्येक समूह के द्वारा चार्ट तैयार किए गए व उनका प्रस्तुतीकरण किया गया। प्रदर्शन के समय बहुत सारे बिन्दु निकल कर आए जो प्रत्येक समूह ने अपनी–अपनी सोच के आधार पर प्रस्तुत किए। इससे उन प्रश्नों के प्रति अधिक समझ विकसित हुई।

हर समूह से जो बातें निकल कर आई वे इस प्रकार हैं– अनुसंधान से संबंधित बारीकियां कौन–कौनसी हैं? अनुसंधान करने की प्रक्रिया क्या है? अनुसंधान के मापदण्ड क्या है? अनुसंधान की शुरुआत कैसे हुई? अनुसंधान व विज्ञान आपस में किसी तरह जुड़े हैं? साहित्यिक ज्ञान क्या है? भाषा में अनुसंधान कैसे किया जा सकता है?

इन बिन्दुओं पर चर्चा करने के पश्चात हमारी अनुसंधान संबंधी समझ का दायरा और बढ़ा। कुछ बिन्दुओं पर नया जानने का मौका मिला और कुछ बातों पर पुनः विचार किया। समूह में हमें एक–दूसरे के विचारों को जानने, समझने तथा संवाद स्थापित करने का मौका मिला।

कार्यशाला की मुख्य विशेषता यह रही कि अनुसंधान से संबंधित कई अन्तर्विषयी मुद्दे भी उभर कर आए।

डॉ. फरज़ाना इरफान, अख़्तर बानो
प्राध्यापक, वि.भ.गो.से. शिक्षक महाविद्यालय

Book-Post (Printed Matter)

If undelivered please return to:

Vidya Bhawan Education Resource Centre
Vidya Bhawan Society Campus,
Dr. Mohan Sinha Mehta Marg,
Fatehpura, Udaipur(Raj.) - 313004
Phone : 0294-2451497
e-mail : vbkhojkhabar@gmail.com

To,
....
....
....
....

प्रकाशक : विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केन्द्र, डॉ. मोहन सिंह मेहता मार्ग, विद्या भवन सोसायटी परिसर, उदयपुर (राज.) फोन : 0294–2451497
मुद्रक : चौधरी ऑफसेट, 11–12 गुरु रामदास कॉलोनी, एम.बी. कॉलेज के सामने, उदयपुर (राज.) फोन : 0294–2584071